

## अध्याय 1: सिंधु घाटी सभ्यता (IVC) - एक ऐतिहासिक झलक



1. मोहनजोदड़ो का विशाल स्नानागार: उन्नत जल प्रबंधन और नगरीय नियोजन का अद्भुत उदाहरण (वास्तविक उत्खनन फोटो)।



2. नर्तकी की कांस्य मूर्ति (मोहनजोदड़ो): कांस्ययुगीन धातु कला का उत्कृष्ट नमूना (संग्रहालय फोटो)।



3. लोथल का गोदीवाड़ा (Dockyard): प्राचीनतम ज्ञात बंदरगाह और समुद्री व्यापार का केंद्र (ऐतिहासिक स्थल फोटो)।



4. पशुपति शिव की मुहर: धार्मिक विश्वास और अपठित भाव-चित्रात्मक लिपि का साक्ष्य (मुहर फोटो)।



5. कालीबंगा के जुते हुए खेत: विश्व में कृषि का प्राचीनतम साक्ष्य (उत्खनन स्थल फोटो)

# SKPF-Wincompete Test Series 2026

## पाठ्य सामग्री - खण्ड 2: भारत का इतिहास

### टेस्ट 05 - प्राचीन भारत (भाग-1)

#### बिंदु 1: सिंधु घाटी सभ्यता और वैदिक काल

##### अध्याय 1: सिंधु घाटी सभ्यता (IVC): उद्भव, भौगोलिक विस्तार एवं नगर नियोजन

#### 1. परिचय एवं नामकरण

सिंधु घाटी सभ्यता विश्व की चार प्राचीनतम नदी घाटी सभ्यताओं में से एक है।

- **हड़प्पा सभ्यता:** चूँकि प्रथम उत्खनित स्थल 'हड़प्पा' (1921) था, इसलिए इसे हड़प्पा सभ्यता कहा जाता है।
- **कांस्ययुगीन सभ्यता:** पहली बार ताँबे और टीन को मिलाकर 'कांसा' बनाने की तकनीक विकसित हुई।
- **आद्य-ऐतिहासिक (Proto-Historic):** लिपि उपलब्ध है लेकिन अभी तक पढ़ी नहीं जा सकी है (भाव-चित्रात्मक लिपि/Boustrophedon)।

#### 2. कालक्रम (Chronology)

सर्वाधिक मान्य तिथि **रेडियो कार्बन (C-14)** पद्धति के अनुसार **2300 ई.पू. से 1750 ई.पू.** मानी जाती है। (डॉ. डी.पी. अग्रवाल द्वारा समर्थित)।

#### 3. भौगोलिक विस्तार (Extent)

यह सभ्यता वर्तमान भारत, पाकिस्तान और अफगानिस्तान के लगभग 12,99,600 वर्ग किमी क्षेत्र में फैली थी।

- **उत्तरी सीमा:** मांडा (चिनाब नदी, जम्मू)।
- **दक्षिणी सीमा:** दैमाबाद (प्रवरा/गोदावरी नदी, महाराष्ट्र)।
- **पूर्वी सीमा:** आलमगीरपुर (हिंडन नदी, उत्तर प्रदेश)।
- **पश्चिमी सीमा:** सुत्कागेनडोर (दाशक नदी, बलूचिस्तान)।

#### 4. प्रमुख स्थल एवं विशिष्ट साक्ष्य (RPSC Special)

स्थल	नदी	खोजकर्ता/उत्खनन	विशिष्ट साक्ष्य
हड़प्पा	रावी	दयाराम साहनी (1921)	अन्नागार, श्मशान (R-37), शंख का बना बैल।

मोहनजोदड़ो	सिंधु	राखालदास बनर्जी (1922)	विशाल स्नानागार, नर्तकी की कांस्य मूर्ति, पशुपति शिव की मुहर।
कालीबंगा	घग्घर	अमलानंद घोष (1953)	जुते हुए खेत (विश्व में प्रथम), अग्नि वेदिकाएं, चूड़ियाँ।
लोथल	भोगवा	एस.आर. राव (1954)	गोदीवाड़ा (Dockyard), चावल के अवशेष, अग्नि वेदिका।
धोलावीरा	कच्छ (गुजरात)	जे.पी. जोशी / आर.एस. विष्ट	स्टेडियम, उन्नत जल प्रबंधन, नगर तीन भागों में विभक्त।
राखीगढ़ी	घग्घर (हरियाणा)	अमरेन्द्र नाथ	भारत में स्थित इस सभ्यता का सबसे बड़ा स्थल।

## 5. नगर नियोजन: सभ्यता की अक्षय निधि

सिंधु सभ्यता की सबसे बड़ी पहचान उसका 'नियोजित शहरीकरण' था।

- **ग्रिड प्रणाली (Grid System):** सड़कें एक-दूसरे को समकोण (90 डिग्री) पर काटती थीं (शतरंज के बिसात की तरह)।
- **नालियाँ:** विश्व की प्रथम उन्नत जल निकासी प्रणाली। नालियाँ ढकी हुई थीं और सोखता गड्ढे (Manholes) बने थे।
- **ईंटों का प्रयोग:** पकी हुई ईंटों (L:B:H = 4:2:1) का प्रचुर प्रयोग।
- **द्वि-स्तरीय नगर:** नगर दो भागों में बंटा था— **पश्चिमी टीला (दुर्ग)** जहाँ शासक वर्ग रहता था, और **पूर्वी टीला (निचला नगर)** जहाँ सामान्य जनता रहती थी। (अपवाद: धोलावीरा में तीन भाग थे)।
- **दरवाजे:** घरों के दरवाजे मुख्य सड़क पर न खुलकर पीछे गलियों में खुलते थे (अपवाद: लोथल)।

## 6. सिंधु नगर नियोजन और आधुनिक स्मार्ट सिटी

सिंधु सभ्यता की नगर योजना केवल स्थापत्य नहीं, बल्कि एक 'अनुशासित शासन' का प्रतीक थी। सड़कों का जाल, पक्की नालियाँ और मानकीकृत ईंटें एक केंद्रीय प्राधिकरण (Central Authority) की ओर संकेत करती हैं। धोलावीरा का उन्नत जल संचयन (Water Harvesting) और लोथल का गोदीवाड़ा यह सिद्ध करते हैं कि ये लोग जल अभियांत्रिकी और वैश्विक व्यापार के ज्ञाता थे। RPSC की दृष्टि से यह महत्वपूर्ण है कि कालीबंगा (राजस्थान) में प्रयुक्त 'दीन-हीन' (कच्ची ईंटों) की बस्ती अन्य स्थलों की तुलना में सामाजिक स्तरीकरण को स्पष्ट करती है।

## 7. महत्वपूर्ण तथ्य

- सिंधु सभ्यता के लोग **लोहे** से परिचित नहीं थे। (RPSC में बार-बार पूछा गया)।

- मुख्य फसलें **गेहूँ और जौ** थीं। कपास उगाने का श्रेय भी इसी सभ्यता को जाता है (यूनानी इसे 'सिंडन' कहते थे)।
- सभ्यता के पतन का सर्वाधिक मान्य कारण **'बाढ़'** (मार्शल एवं मैके द्वारा) माना जाता है, जबकि हीलर इसे 'आर्यों का आक्रमण' मानते हैं।
- राखीगढ़ी को अब भारत का सबसे बड़ा स्थल माना जाता है, पूर्व में यह स्थान धोलावीरा को दिया जाता था।

## 8. तालिका

प्रश्न का केंद्र	उत्तर / तथ्य
सबसे प्राचीन स्थल	भिरड़ाणा (हरियाणा) - नवीनतम शोध।
लिपिकीय दिशा	दाएँ से बाएँ, फिर बाएँ से दाएँ (गोमूत्रिका लिपि)।
पवित्र पशु	कूबड़ वाला बैल।
मुहरें	मुख्य रूप से सेलखड़ी (Steatite) से निर्मित।

wincompete

## अध्याय 2: IVC: आर्थिक, सामाजिक, धार्मिक जीवन एवं पतन के कारण - एक ऐतिहासिक झलक



1. पशुपति शिव की मुहर: 'आद्य-शिव' और योग का प्राचीनतम साक्ष्य (मोहनजोदड़ो से प्राप्त)।



2. लोथल का गोदीवाड़ा (Dockyard): उन्नत समुद्री व्यापार और मेसोपोटामिया संबंधों का प्रमाण।



3. मृण्मूर्तियां और खिलौने: मातृसत्तात्मक समाज और मनोरंजन के साधन (टेराकोटा कला)।



4. अग्नि वेदिकाएं (कालीबंगा): कर्मकांडीय अनुष्ठानों और धार्मिक विश्वासों का संकेत।



5. अन्त्येष्टि संस्कार: समाधान विधियों और परलोक में विश्वास का साक्ष्य (हड़प्पा/लोथल)।

## अध्याय 2: IVC: आर्थिक, सामाजिक, धार्मिक जीवन एवं पतन के कारण

### 1. आर्थिक जीवन: कृषि एवं उन्नत व्यापारिक संबंध

हड़प्पा अर्थव्यवस्था का मुख्य आधार उन्नत कृषि और विस्तृत आंतरिक व विदेशी व्यापार था।

- **कृषि एवं पशुपालन:** ये लोग विश्व में **कपास (Sindon)** उगाने वाले प्रथम थे। मुख्य फसलें गेहूँ, जौ, राई और मटर थीं। लोथल से चावल के और रंगपुर से धान की भूसी के साक्ष्य मिले हैं।
- **आंतरिक व्यापार:** पत्थरों और धातुओं का व्यापार संपूर्ण भारतीय उपमहाद्वीप में फैला था। जैसे— तांबा (खेतड़ी, राजस्थान), बहुमूल्य पत्थर (गुजरात)।
- **विदेशी व्यापार (मेसोपोटामिया संबंध):** मेसोपोटामिया (सुमेरिया) के लेखों में 'मेलुहा' शब्द का प्रयोग सिंधु सभ्यता के लिए किया गया है।
  - मेसोपोटामिया के 'अक्कड' शासक सारगोन के अभिलेख में मेलुहा, दिलमुन (बहरीन) और मागन (ओमान) के साथ व्यापारिक संबंधों का उल्लेख है।
  - **आयातित वस्तुएं:** टिन (अफगानिस्तान), सोना (कोलार, कर्नाटक), चांदी (ईरान/अफगानिस्तान), लाजवर्द (बदखशां, अफगानिस्तान)।

### 2. सामाजिक जीवन: मातृसत्तात्मक समाज एवं स्तरीकरण

सिंधु समाज अपनी समकालीन सभ्यताओं की तुलना में अधिक उदार और नियोजित था।

- **समाज का स्वरूप:** भारी संख्या में नारी मृण्मूर्तियों (Terra-cotta figurines) के मिलने के आधार पर इसे 'मातृसत्तात्मक समाज' माना जाता है।
- **सामाजिक विभाजन:** समाज चार वर्गों में विभक्त था— विद्वान, योद्धा, व्यापारी/शिल्पी और श्रमिक। नगरों का दुर्ग और निचले नगर में विभाजन सामाजिक स्तरीकरण को दर्शाता है।
- **मनोरंजन:** ये लोग पासा (Dice) खेलने, नृत्य, शिकार और पशुओं की लड़ाई देखने के शौकीन थे। लोथल से शतरंज के बोर्ड जैसा साक्ष्य मिला है।
- **अन्त्येष्टि संस्कार:** तीन विधियां प्रचलित थीं— पूर्ण समाधीकरण (सर्वाधिक प्रचलित), आंशिक समाधीकरण और दाह संस्कार।

### 3. धार्मिक जीवन: आध्यात्मिक निरंतरता का मूल

IVC के धार्मिक विश्वास आधुनिक हिंदू धर्म के कई तत्वों के पूर्वज माने जाते हैं।

- **पशुपति शिव:** मोहनजोदड़ो से प्राप्त एक मुहर पर तीन मुख वाले पुरुष को योगासन में बैठे दिखाया गया है। सर जॉन मार्शल ने इसे 'आद्य-शिव' (Proto-Shiva) कहा है।
  - **मुहर पर अंकित पशु:** हाथी, बाघ, गैंडा और भैंसा। आसन के नीचे दो हिरण।
- **मातृदेवी की पूजा:** एक मुहर पर स्त्री के गर्भ से पौधा निकलता दिखाया गया है, जो 'पृथ्वी देवी' या उर्वरता की देवी का प्रतीक है।
- **प्रकृति पूजा:** पीपल के वृक्ष, नाग और स्वास्तिक (सूर्य पूजा का प्रतीक) की पूजा के साक्ष्य मिले हैं।
- **अग्नि वेदिकाएं:** कालीबंगा और लोथल से प्राप्त सात अग्नि वेदिकाएं कर्मकांडीय अनुष्ठानों की ओर संकेत करती हैं।

wincompete

#### 4. पतन के कारण: एक विश्लेषण

सभ्यता के अंत को लेकर विद्वानों में मतभेद है, क्योंकि यह सभ्यता एकाएक नष्ट न होकर क्रमिक रूप से ग्रामीण संस्कृति में बदली।

कारण	विद्वान / प्रतिपादक
प्रलयकारी बाढ़	मार्शल, मैके और एस.आर. राव (सर्वाधिक मान्य)।
आर्यों का आक्रमण	ह्वीलर, पिगट और गार्डन चाइल्ड (वर्तमान में नकारा गया)।
जलवायु परिवर्तन	ऑरिल स्टीन, ए.एन. घोष।
भू-तात्विक परिवर्तन	एम.आर. साहनी, राइक्स और डेल्स।
महामारी (मलेरिया)	के.यू.आर. कैनेडी।
पारिस्थितिक असंतुलन	फेयर सर्विस।

#### 5. विश्लेषणात्मक विवरण (Analysis Box)

**विश्लेषण: सिंधु धर्म और आधुनिक हिंदू परंपरा**

सिंधु घाटी सभ्यता का सबसे बड़ा अवदान उसकी धार्मिक निरंतरता है। पशुपति शिव की मुहर पर अंकित योग मुद्रा आज भी भारतीय संस्कृति का आधार है। पीपल की पूजा, नाग पूजा और जल की पवित्रता (विशाल स्नानागार) जैसे तत्व आज भी भारतीय समाज में विद्यमान हैं। व्यापारिक दृष्टिकोण से, मेसोपोटामिया के साथ उनके संबंध यह सिद्ध करते हैं कि हड़प्पावासी केवल क्षेत्रीय शक्ति नहीं, बल्कि एक वैश्विक आर्थिक इकाई थे। उनका लिपि को न पढ़ पाना ही हमारे और उनके बीच की एकमात्र दीवार है।

#### 6. महत्वपूर्ण तथ्य

- **तथ्य:** सिंधु सभ्यता के लोग 'तलवार' और 'घोड़े' (युद्धक पशु के रूप में) से परिचित नहीं थे, यद्यपि सुरकोटड़ा से घोड़े की हड्डियों के अवशेष मिले हैं।

- नोट: चन्हुदड़ो एकमात्र ऐसा स्थल है जहाँ से वक्राकार ईंटें मिली हैं और यहाँ कोई दुर्ग (Citadel) नहीं था।
- विरोधाभास: कुछ विद्वान कालीबंगा के भूकंप के साक्ष्यों को ही सभ्यता के पतन का प्रारंभिक कारण मानते हैं।

## 7. त्वरित संदर्भ तालिका

प्रश्न का केंद्र	उत्तर / तथ्य
सिंधु लिपि की प्रकृति	भाव-चित्रात्मक (Pictographic), अभी तक अपठनीय।
व्यापारिक बंदरगाह	लोथल, सुत्कागेनडोर, प्रभास पाटन।
प्रमुख उद्योग	मनके बनाना (Bead making) - चन्हुदड़ो एवं लोथल।
मेसोपोटामिया की बेलनाकार मुहरें	मोहनजोदड़ो एवं लोथल से प्राप्त।

wincompete

## अध्याय 3: वैदिक काल



1. भौगोलिक विस्तार: सप्त-सैंधव से गंगा-यमुना दोआब तक (प्राचीन मानचित्र)।



2. दशराज्ञ युद्ध (रावी तट): राजा सुदास की विजय (ऐतिहासिक पेंटिंग)।



3. सामाजिक संरचना: पुरुष सूक्त और वर्ण व्यवस्था का उदय (पांडुलिपि चित्रण)।



4. आर्थिक जीवन: 'गौ' धन से 'लौह' कृषि क्रांति तक (प्रतीकात्मक चित्र)।



5. लौह युग का प्रमाण: कृषि और बस्तियों का आधार (पुरातत्व अवशेष)।

## अध्याय 3: वैदिक काल: सामाजिक, राजनीतिक एवं आर्थिक संरचना

### 1. भौगोलिक विस्तार: सप्त-सैंधव से गंगा-यमुना दोआब तक

आर्यों का प्रारंभिक निवास स्थान 'सप्त-सैंधव' प्रदेश (सात नदियों की भूमि) था। उत्तर वैदिक काल में यह विस्तार पूर्व की ओर गंडक नदी (सदानीरा) तक पहुँच गया।

प्राचीन नाम	आधुनिक नाम
वितस्ता	झेलम
असिनी	चेनाब
परुष्णी	रावी (दशराज युद्ध का स्थल)
विपाशा	ब्यास
शुतुद्री	सतलुज
कुभा	काबुल
दृषद्वती	घग्घर

### 2. राजनीतिक संरचना: 'जन' से 'जनपद' का सफर

वैदिक राजनीति कबीलाई ढांचे से क्षेत्रीय राज्य की ओर विकसित हुई।

- **प्रशासनिक इकाइयाँ:** कुल (परिवार) → ग्राम → विश → **जन** (ऋग्वैदिक) → **जनपद** (उत्तर वैदिक)।
- **प्रमुख अधिकारी:** \* **कुलप:** परिवार का मुखिया।
  - **ग्रामणी:** ग्राम का मुखिया।
  - **विशपति:** विश का प्रधान।
  - **गोप/राजन्:** जन का रक्षक।
- **लोकतांत्रिक संस्थाएँ:** ऋग्वैदिक काल में '**सभा**' (वृद्ध/कुलीन लोगों की संस्था) और '**समिति**' (जनसाधारण की सभा) राजा की निरंकुशता पर रोक लगाती थीं।
- **दशराज्ञ युद्ध (Battle of Ten Kings):** परुष्णी (रावी) नदी के तट पर भरत जन के राजा **सुदास** और दस राजाओं के संघ के बीच युद्ध हुआ, जिसमें सुदास विजयी रहे।

### 3. सामाजिक संरचना: वर्ण व्यवस्था और पितृसत्ता

समाज का आधार 'परिवार' था, जो पितृसत्तात्मक था, लेकिन स्त्रियों की स्थिति में कालान्तर में परिवर्तन आया।

- **वर्ण व्यवस्था का उदय:** ऋग्वेद के **10वें मंडल के 'पुरुष सूक्त'** में पहली बार चार वर्णों (ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र) का उल्लेख मिलता है। ऋग्वैदिक काल में यह व्यवस्था '**कर्म**' पर आधारित थी, जो उत्तर वैदिक काल में '**जन्म**' पर आधारित होकर जटिल हो गई।
- **स्त्रियों की स्थिति:** \* ऋग्वैदिक काल में स्त्रियाँ शिक्षित थीं (लोपामुद्रा, घोषा, अपाला) और 'उपनयन' व 'सभा' में भाग लेती थीं।
  - उत्तर वैदिक काल में स्त्रियों की स्थिति में गिरावट आई और उन्हें सभा से बाहर कर दिया गया।
- **आश्रम व्यवस्था:** उत्तर वैदिक काल में जीवन को चार भागों (ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ, संन्यास) में बाँटने की शुरुआत हुई। **जाबालोपनिषद** में सर्वप्रथम चारों आश्रमों का उल्लेख मिलता है।

### 4. आर्थिक जीवन: पशुपालन से कृषि की ओर (लोहे का प्रभाव)

आर्थिक व्यवस्था में 'गौ' (गाय) का महत्व ऋग्वैदिक काल में सर्वोच्च था, जो उत्तर वैदिक काल में भूमि और कृषि में स्थानांतरित हो गया।

- **ऋग्वैदिक काल:** मुख्य धन 'गौ' थी। युद्धों को '**गविष्टि**' (गायों की खोज) कहा जाता था। निष्क (सोने का आभूषण) विनिमय का माध्यम था।
- **उत्तर वैदिक काल (लोहे का युग):** 1000 ई.पू. के आसपास '**लोहे**' (श्याम अयस) के प्रयोग ने कृषि में क्रांति ला दी।
  - अब आर्यों ने जंगलों को काटकर स्थाई बस्तियाँ बनाईं।
  - '**बलि**' जो पहले स्वेच्छा से दिया जाने वाला उपहार था, अब एक अनिवार्य 'कर' बन गया।
  - प्रमुख फसलें: व्रीहि (चावल), यव (जौ), गोधूम (गेहूँ)।

### 5. विश्लेषणात्मक विवरण (Analysis Box)

**विश्लेषण: कबीलाई गणतंत्र से राजशाही की ओर**

वैदिक काल का अध्ययन केवल धार्मिक इतिहास नहीं, बल्कि एक 'सामाजिक-राजनीतिक विकास' का अध्ययन है। ऋग्वैदिक काल में राजा एक 'कबीलाई मुखिया' मात्र था जिसे 'सभा' और 'समिति' नियंत्रित करती थी। उत्तर वैदिक काल में '**लोहे**' की खोज ने अधिशेष उत्पादन (Surplus Production) को जन्म दिया, जिससे राजा की शक्ति बढ़ी और कबीले (जन) बड़े जनपदों में तब्दील हो गए। इसी काल में 'वर्ण व्यवस्था' का जन्म आधारित होना भारतीय समाज की सबसे बड़ी संरचनात्मक त्रासदी और विशेषता दोनों बनी।

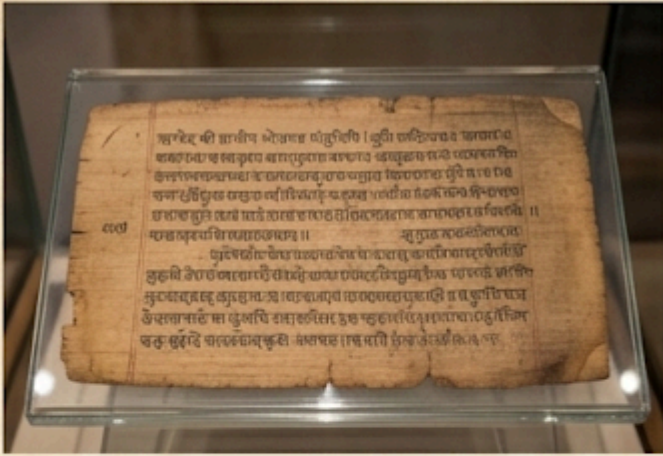
### 6. महत्वपूर्ण तथ्य एवं विरोधाभास (Important Notes)

- **तथ्य:** ऋग्वेद में '**गंगा**' का उल्लेख केवल 1 बार और '**यमुना**' का 3 बार हुआ है, जबकि '**सरस्वती**' को 'नदीतमा' (सबसे पवित्र नदी) कहा गया है।
- **नोट:** उत्तर वैदिक काल में 'अथर्ववेद' में सभा और समिति को प्रजापति की '**दो पुत्रियाँ**' कहा गया है।
- **विरोधाभास:** मैक्स मूलर आर्यों का मूल निवास 'मध्य एशिया' मानते हैं, जबकि बाल गंगाधर तिलक इसे 'उत्तरी ध्रुव' मानते हैं। RPSC में 'मध्य एशिया' मत सर्वाधिक स्वीकार्य है।

## 7. त्वरित संदर्भ तालिका

प्रश्न का केंद्र	ऋग्वैदिक काल	उत्तर वैदिक काल
मुख्य आधार	पशुपालन (गाय)	कृषि (भूमि)
वर्ण व्यवस्था	कर्म आधारित	जन्म आधारित
प्रमुख धातु	तांबा (अयस)	लोहा (कृष्ण अयस)
प्रमुख देवता	इन्द्र (पुरंदर)	प्रजापति (सृजनकर्ता)

wincompete



1. ऋग्वेद की प्राचीन भोजपत्र पांडुलिपि (श्रुति साहित्य का आधार)।



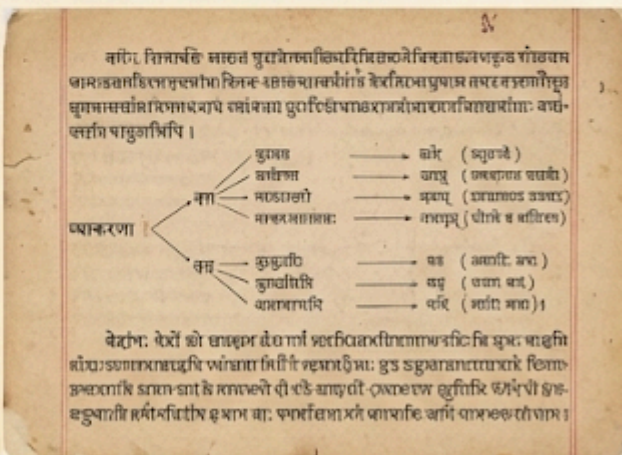
2. वैदिक यज्ञ अनुष्ठान: ब्राह्मण ग्रंथों का कर्मकांडीय पक्ष (ऐतिहासिक फोटो)।



3. उपनिषद (वेदांत): गुरु-शिष्य संवाद और अरण्य में चिंतन (लघुचित्र, 18वीं सदी)।



4. 'सत्यमेव जयते' (मुण्डकोपनिषद): भारत का राष्ट्रीय आदर्श वाक्य (सारनाथ स्तंभ शीर्ष)।



5. वेदांग: वेदों को समझने के छह अंग (व्याकरण पांडुलिपि और ज्योतिष यंत्र)।

## अध्याय 4: वैदिक साहित्य: वेद, ब्राह्मण, आरण्यक, उपनिषद एवं वेदांग

### 1. श्रुति बनाम स्मृति साहित्य (Shruti vs. Smriti)

वैदिक साहित्य को दो मुख्य श्रेणियों में विभाजित किया गया है:

- श्रुति साहित्य (Shruti):** 'जो सुना गया'। इसे 'अपौरुषेय' (देवताओं द्वारा रचित) माना जाता है। इसमें चारों वेद, ब्राह्मण, आरण्यक और उपनिषद शामिल हैं।
- स्मृति साहित्य (Smriti):** 'जो याद रखा गया'। यह ऋषियों द्वारा रचित है। इसमें वेदांग, सूत्र, पुराण और महाकाव्य (रामायण, महाभारत) शामिल हैं।

### 2. चार वेद (संहिता) और उनके उपवेद

प्रत्येक वेद का अपना एक विशिष्ट क्षेत्र, पुरोहित और 'उपवेद' होता है।

वेद	विषय वस्तु	पुरोहित	उपवेद
ऋग्वेद	देवताओं की स्तुति (10 मंडल, 1028 सूक्त)	होतृ (Hotri)	आयुर्वेद
सामवेद	भारतीय संगीत का जनक (गायन योग्य मंत्र)	उद्गातृ (Udgatri)	गंधर्ववेद
यजुर्वेद	यज्ञ विधियाँ और कर्मकांड (गद्य-पद्य मिश्रित)	अध्वर्यु (Adhvaryu)	धनुर्वेद
अथर्ववेद	जादू-टोना, औषधि, समाज (ब्रह्म वेद)	ब्रह्मा (Brahma)	शिल्पवेद / अथर्ववेद

- ऋग्वेद विशिष्ट तथ्य:** इसके तीसरे मंडल में **गायत्री मंत्र** (सविता को समर्पित) है। दसवें मंडल (पुरुष सूक्त) में वर्ण व्यवस्था का प्रथम उल्लेख है।
- यजुर्वेद के दो भाग:** शुक्ल यजुर्वेद और कृष्ण यजुर्वेद।

### 3. ब्राह्मण, आरण्यक और उपनिषद: ज्ञान का क्रमिक विकास

वेदों की व्याख्या करने के लिए गद्य में **ब्राह्मण** ग्रंथों की रचना हुई।

1. **ब्राह्मण ग्रंथ:** यज्ञों के विधान और अर्थ को स्पष्ट करते हैं।
  - ऐतरेय ब्राह्मण (ऋग्वेद), शतपथ ब्राह्मण (यजुर्वेद)— शतपथ ब्राह्मण सबसे प्राचीन और विशाल है।
2. **आरण्यक:** 'अरण्य' (वन) में लिखे गए ग्रंथ। ये दार्शनिक और रहस्यात्मक विषयों पर आधारित हैं। ये यज्ञों के स्थान पर 'चिंतन' पर बल देते हैं।
3. **उपनिषद (वेदांत):** इनका अर्थ है 'गुरु के समीप बैठना'। ये वेदों का अंतिम भाग हैं, इसलिए इन्हें 'वेदांत' कहा जाता है।
  - संख्या: कुल 108 (मुख्य 12-13)।
  - मुण्डकोपनिषद: भारत का राष्ट्रीय आदर्श वाक्य 'सत्यमेव जयते' यहीं से लिया गया है।
  - कठोपनिषद: यम और नचिकेता का प्रसिद्ध संवाद।
  - बृहदारण्यक उपनिषद: 'तमसो मा ज्योतिर्गमय' और याज्ञवल्क्य-मैत्रेयी संवाद।

## 4. वेदांग: वेदों को समझने के छह अंग

वेदों के शुद्ध उच्चारण और अर्थ समझने के लिए छह वेदांगों की रचना की गई। इन्हें 'वेद-पुरुष' के अंगों के रूप में कल्पित किया गया है:

1. **शिक्षा (Shiksha):** नासिका (स्वर विज्ञान/Phonetics)।
2. **कल्प (Kalpa):** हाथ (धार्मिक अनुष्ठान/Rituals)।
3. **व्याकरण (Vyakarana):** मुख (Linguistics)।
4. **निरुक्त (Nirukta):** कान (व्युत्पत्ति शास्त्र/Etymology)— इसके रचयिता **यास्क** हैं।
5. **छंद (Chhanda):** पैर (Metre)।
6. **ज्योतिष (Jyotisha):** आँख (Astronomy)— प्रसिद्ध ग्रंथ 'वेदांग ज्योतिष' (लगध मुनि)।

## 5. विश्लेषणात्मक विवरण (Analysis Box)

**विश्लेषण: 'श्रुति' से 'दर्शन' की यात्रा**

वैदिक साहित्य का विकास मानव चेतना के क्रमिक विकास को दर्शाता है। जहाँ 'वेद' प्रकृति की शक्तियों के प्रति विस्मय और स्तुति हैं, वहीं 'ब्राह्मण' ग्रंथ उन स्तुतियों को कर्मकांडीय व्यवस्था में बांधते हैं। 'आरण्यक' उस कर्मकांड से ऊबकर एकांत चिंतन की ओर बढ़ते हैं और अंततः 'उपनिषद' कर्मकांड को पूरी तरह नकार कर 'ब्रह्म' और 'आत्मा' की एकता का दर्शन (वेदांत) स्थापित करते हैं। RPSC परीक्षाओं में अक्सर इन ग्रंथों के मिलान (Matching) और प्रसिद्ध सूक्तियों (जैसे सत्यमेव जयते) के मूल स्रोत पूछे जाते हैं।

## 6. महत्वपूर्ण तथ्य एवं विरोधाभास (Important Notes)

- **तथ्य:** ऋग्वेद, सामवेद और यजुर्वेद को सम्मिलित रूप से '**वेदत्रयी**' कहा जाता है (अथर्ववेद इसमें शामिल नहीं है)।
- **नोट:** 'गोपथ' अथर्ववेद का एकमात्र ब्राह्मण ग्रंथ है।
- **विरोधाभास:** वेदों को 'अपौरुषेय' माना जाता है, लेकिन ऐतिहासिक दृष्टि से इनकी रचना विभिन्न कालखंडों में अलग-अलग ऋषियों (जैसे विश्वामित्र, वशिष्ठ) द्वारा की गई थी।

wincompete

## 7. त्वरित संदर्भ तालिका

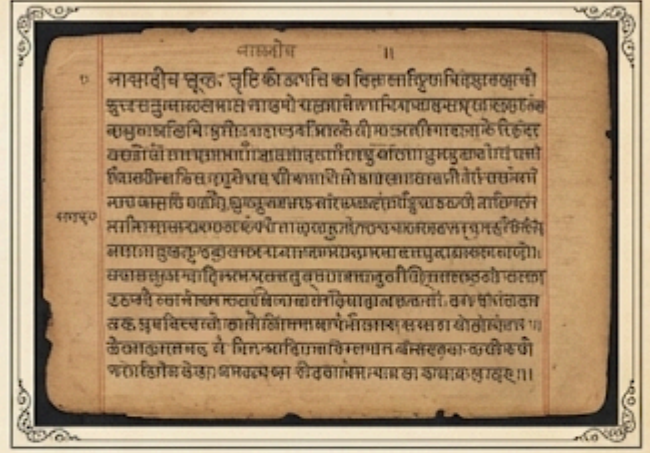
प्रश्न का केंद्र	उत्तर / तथ्य
अस्तित्व का आधार	सत्यमेव जयते (मुण्डकोपनिषद)
संगीत का मूल	सामवेद
गद्य-पद्य मिश्रित वेद	यजुर्वेद
शून्य का उल्लेख	पिंगल रचित छंदशास्त्र (वेदांग)
वेदों की भाषा	संस्कृत (वैदिक)

wincompete

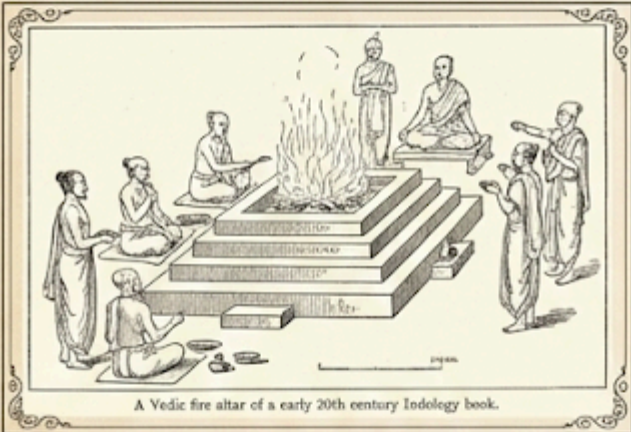
# अध्याय 5: वैदिक धर्म और दर्शन



1. प्रमुख ऋग्वैदिक देवता: इन्द्र, अग्नि और वरुण (लघुचित्र, 18वीं सदी)।



2. नास्सदीय सूक्तः सृष्टि की उत्पत्ति का दार्शनिक चिंतन (ऋग्वेद पांडुलिपि)।



A Vedic fire altar of a early 20th century Indology book.

3. वैदिक यज्ञः अश्वमेध और राजसूय जैसे जटिल अनुष्ठान (ऐतिहासिक चित्रण)।



4. 'ऋत' की अवधारणा: ब्रह्मांडीय और नैतिक व्यवस्था के रक्षक वरुण (प्राचीन मूर्तिकला)।

पुरुष सूक्तः वर्ण व्यवस्था का उद्गम।  
गायत्री मंत्रः सविता को समर्पित।  
सत्यमेव जयते: मुण्डकोपनिषद।

5. महत्वपूर्ण वैदिक सूक्त और मंत्र (शिलालेख शैली में)।

## अध्याय 5: वैदिक धर्म और दर्शन: देवता, यज्ञ एवं दार्शनिक सूक्त

यह सामग्री यास्क के 'निरुक्त', मैक्स मूलर के 'हेनोथीज्म' (Eotheism) सिद्धांत और आर.सी. मजूमदार के ऐतिहासिक विश्लेषणों पर आधारित है।

### 1. वैदिक देवताओं का वर्गीकरण

यास्क ने अपने ग्रंथ 'निरुक्त' में ऋग्वैदिक देवताओं को उनके निवास स्थान के आधार पर तीन श्रेणियों में विभाजित किया है:

श्रेणी	स्थान	प्रमुख देवता
आकाश के देवता	द्युस्थान	सूर्य, वरुण, मित्र, पूषण, विष्णु, अदिति, उषा।
अंतरिक्ष के देवता	मध्यस्थान	इन्द्र, मरुत, रुद्र, वायु, पर्जन्य।
पृथ्वी के देवता	पृथ्वीस्थान	अग्नि, सोम, पृथ्वी, बृहस्पति, सरस्वती।

### 2. प्रमुख ऋग्वैदिक देवता (RPSC विशेष)

- **इन्द्र (Indra):** ऋग्वेद के सर्वाधिक महत्वपूर्ण देवता (250 सूक्त)। इन्हें 'पुरंदर' (किलों को तोड़ने वाला) और 'वृत्रहन्ता' कहा गया है। ये युद्ध और वर्षा के देवता हैं।
- **अग्नि (Agni):** दूसरे महत्वपूर्ण देवता (200 सूक्त)। इन्हें देवताओं और मनुष्यों के बीच का 'मध्यस्थ' माना जाता है। यज्ञ की आहुति इन्हीं के माध्यम से देवताओं तक पहुँचती है।
- **वरुण (Varuna):** ये जल के देवता और 'ऋत' (Rta) के रक्षक हैं। इन्हें 'ऋतस्य गोपा' कहा जाता है। 'ऋत' ब्रह्मांड की नैतिक और भौतिक व्यवस्था का नाम है।
- **सोम (Som):** ऋग्वेद का 9वाँ मंडल पूरी तरह सोम को समर्पित है। ये वनस्पतियों के अधिपति हैं।
- **विष्णु:** ऋग्वेद में इनका उल्लेख 'आकाश के देवता' के रूप में है, जो तीन डगों (उरुगाय) में संपूर्ण ब्रह्मांड को नाप लेते हैं।

### 3. प्रमुख दार्शनिक सूक्त: ब्रह्मांडीय चिंतन

- **पुरुष सूक्त (Purusha Sukta):** ऋग्वेद के 10वें मंडल में स्थित। इसमें एक 'विराट पुरुष' के अंगों से सृष्टि और चार वर्णों (ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र) की उत्पत्ति का प्रथम उल्लेख मिलता है।
- **नासदीय सूक्त (Nasadiya Sukta):** ऋग्वेद का सबसे गहरा दार्शनिक सूक्त। यह सृष्टि की उत्पत्ति के रहस्य पर विचार करता है और कहता है कि प्रारंभ में "न असत् था, न सत् था"। यह 'एकेश्वरवाद' और 'अद्वैत' की ओर प्रथम संकेत है।
- **हिरण्यगर्भ सूक्त (Hiranyagarbha Sukta):** यह ईश्वर को 'प्रजापति' के रूप में सृजनकर्ता घोषित करता है।
- **विवाह सूक्त:** इसमें ऋग्वैदिक काल की विवाह पद्धति और आदर्शों का वर्णन है।



#### 4. वैदिक यज्ञ एवं अनुष्ठान

उत्तर वैदिक काल में यज्ञों का स्वरूप जटिल और राजनैतिक हो गया:

- **राजसूय यज्ञ:** राजा के राज्याभिषेक के समय, शक्ति प्रदर्शन हेतु।
- **अश्वमेध यज्ञ:** राज्य की सीमाओं के विस्तार हेतु।
- **वाजपेय यज्ञ:** राजा द्वारा अपने शौर्य के प्रदर्शन हेतु 'रथ दौड़' का आयोजन।
- **अग्निष्टोम यज्ञ:** देवताओं को प्रसन्न करने हेतु सोम रस की आहुति।

#### 5. विश्लेषणात्मक विवरण (Analysis Box)

**विश्लेषण: 'ऋत' और वैदिक नैतिकता का आधार**

वैदिक दर्शन का केंद्र 'ऋत' (Rta) है। यह केवल एक धार्मिक शब्द नहीं है, बल्कि एक 'वैश्विक विधिक व्यवस्था' (Cosmic Law) है। वरुण इसके प्रहरी हैं। ऋग्वैदिक ऋषियों का मानना था कि सूर्य, चंद्रमा और ऋतुएँ इसी 'ऋत' के वश में हैं। जब व्यक्ति इस व्यवस्था का उल्लंघन करता है, तो वह 'पाप' का भागी बनता है। दर्शन की दृष्टि से, वैदिक धर्म 'बहुदेववाद' से शुरू होकर नासदीय सूक्त के 'एकेश्वरवाद' (एकं सद् विप्रा बहुधा वदन्ति) तक पहुँचता है, जो भारतीय दर्शन की सबसे बड़ी उपलब्धि है।

#### 6. महत्वपूर्ण तथ्य एवं विरोधाभास (Important Notes)

- **तथ्य: 'अघ्न्या'** (न मारने योग्य) शब्द का प्रयोग ऋग्वेद में 'गाय' के लिए किया गया है।
- **तथ्य: 'अदिति'** को देवताओं की माता और 'उषा' को भोर की देवी के रूप में ऋग्वेद में विशेष सम्मान प्राप्त है।
- **नोट:** मैक्स मूलर ने वेदों की इस प्रवृत्ति को 'हेनोथीज्म' (एक समय में एक ही देवता को सर्वोच्च मानना) कहा है।
- **विरोधाभास:** जहाँ ऋग्वेद में इन्द्र प्रधान हैं, वहीं उत्तर वैदिक काल में 'प्रजापति' (सृष्टि के निर्माता) सर्वोच्च देवता बन गए।

## 7. त्वरित संदर्भ तालिका

सूक्त / शब्द	मूल स्रोत / अर्थ
गायत्री मंत्र	ऋग्वेद (तीसरा मंडल) - रचयिता विश्वामित्र
सत्यमेव जयते	मुण्डकोपनिषद (अथर्ववेद का हिस्सा)
तमसो मा ज्योतिर्गमय	बृहदारण्यक उपनिषद
दशराज्ञ युद्ध	ऋग्वेद (7वाँ मंडल) - सुदास विजयी
ऋतस्य गोपा	वरुण देव की उपाधि

wincompete



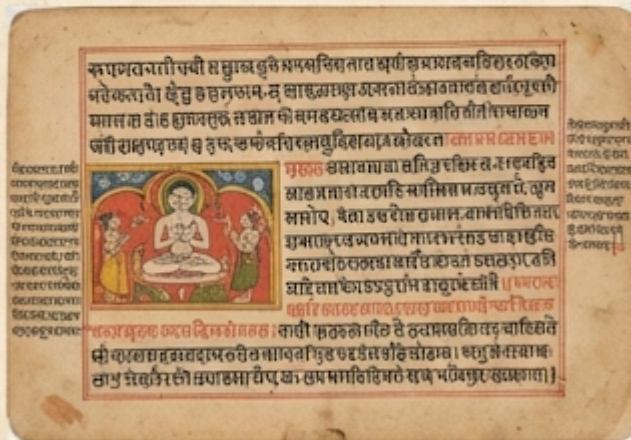
1. 24वें तीर्थंकर वर्धमान महावीर की ऐतिहासिक प्रतिमा। (जैन धर्म के वास्तविक संस्थापक)।



2. स्याद्वाद (सप्तभंगी नय): 'अनेकांतवाद' को दर्शाती 'अंधे और हाथी' की कथा पर आधारित प्राचीन पेंटिंग।



3. दिलवाड़ा जैन मंदिर (माउंट आबू): जैन स्थापत्य कला का उत्कृष्ट उदाहरण (ऐतिहासिक फोटो)।



4. जैन आगम साहित्य: 'कल्पसूत्र' की एक प्राचीन सचित्र पांडुलिपि (जोधपुर संग्रहालय)।



5. जैन साधु-साध्वी: 'पंच महाव्रत' का पालन करते श्वेतांबर/दिगंबर संप्रदाय के अनुयायी (वास्तविक तस्वीर)।

# बिंदु 2: छठी शताब्दी ई.पू. के धार्मिक विचार (श्रमण परंपरा, बौद्ध और जैन धर्म)

## अध्याय 6: जैन धर्म: तीर्थंकर, सिद्धांत और दर्शन

यह सामग्री 'आचारांग सूत्र', 'कल्पसूत्र' और डॉ. हीरालाल जैन व डॉ. नगेंद्र के शोध संकलनों पर आधारित है।

### 1. श्रमण परंपरा और जैन धर्म का उदय

छठी शताब्दी ई.पू. में उत्तर भारत में 'वैदिक कर्मकांड' और 'वर्ण व्यवस्था' की जटिलता के विरुद्ध जो वैचारिक क्रांति हुई, उसे **श्रमण परंपरा** कहा जाता है। जैन धर्म इस परंपरा का सबसे प्राचीन और व्यवस्थित रूप है।

- **तीर्थंकर परंपरा:** जैन धर्म के अनुसार, इसमें **24 तीर्थंकर** हुए हैं।
  - **प्रथम तीर्थंकर:** ऋषभदेव (आदिनाथ)। इनका उल्लेख ऋग्वेद में भी मिलता है।
  - **23वें तीर्थंकर:** पार्श्वनाथ (ऐतिहासिक पुरुष)। इन्होंने 'चातुर्याम धर्म' (सत्य, अहिंसा, अस्तेय, अपरिग्रह) दिया।
  - **24वें तीर्थंकर:** वर्धमान महावीर।

### 2. भगवान महावीर: जीवन परिचय

- **जन्म:** 540 ई.पू. (कुछ स्रोतों में 599 ई.पू.) में वैशाली के निकट **कुण्डग्राम** में।
- **वंश:** ज्ञात्रक कुल (क्षत्रिय)। पिता- सिद्धार्थ, माता- त्रिशला (लिच्छवी राजकुमारी)।
- **ज्ञान प्राप्ति (केवल्य):** 12 वर्ष की कठिन तपस्या के बाद **जूंभिक ग्राम** में ऋजुपालिका नदी के तट पर 'साल' वृक्ष के नीचे।
- **उपाधियाँ:** केवलिन (सर्वोच्च ज्ञान), जिन (विजेता), अर्हत् (योग्य) और निग्रंथ (बंधनरहित)।
- **निर्वाण:** 72 वर्ष की आयु में **पावापुरी** (बिहार) में।

### 3. जैन दर्शन के आधार स्तंभ

#### A. त्रिरत्न (Three Jewels):

मोक्ष प्राप्ति के लिए तीन साधन अनिवार्य हैं:

1. **सम्यक् दर्शन:** सत्य में विश्वास।
2. **सम्यक् ज्ञान:** वास्तविक ज्ञान।
3. **सम्यक् चरित्र:** नैतिक आचरण।

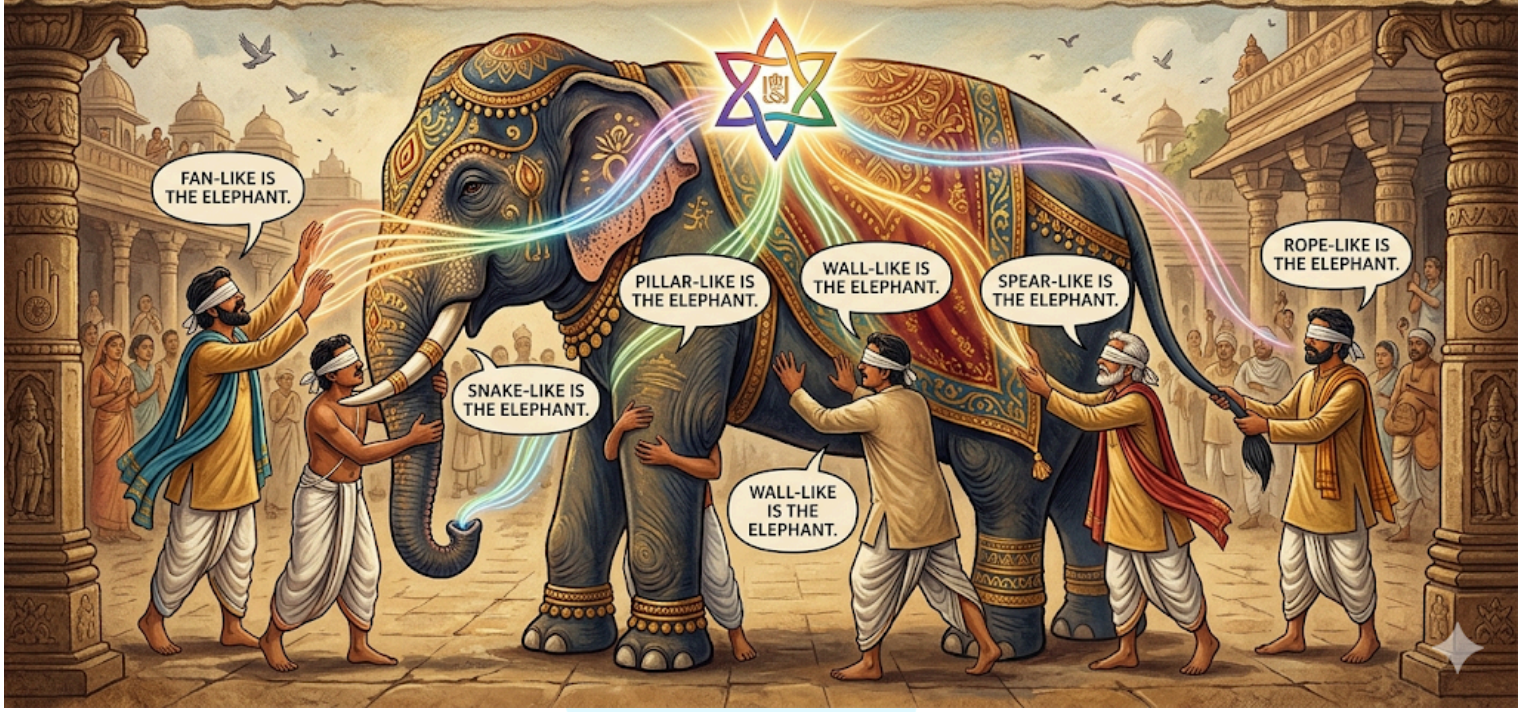
#### B. पंच महाव्रत (Five Great Vows):

1. **अहिंसा:** मन, वचन और कर्म से किसी को कष्ट न देना। (जैन धर्म का मूल केंद्र)।
2. **सत्य:** सदा सत्य बोलना।
3. **अस्तेय:** चोरी न करना।
4. **अपरिग्रह:** संपत्ति का संचय न करना।
5. **ब्रह्मचर्य:** इंद्रिय निग्रह (इसे **महावीर स्वामी** ने पाँचवें व्रत के रूप में जोड़ा)।

### 4. जैन तर्कशास्त्र: अनेकांतवाद और स्याद्वाद

- **अनेकांतवाद (Anekantavada):** यह एक 'तात्विक' (Ontological) सिद्धांत है। इसके अनुसार सत्य या वस्तु के अनंत धर्म होते हैं। एक साधारण व्यक्ति केवल कुछ ही धर्मों को देख पाता है।
- **स्याद्वाद (Syadvada):** यह 'ज्ञानमीमांसीय' (Epistemological) सिद्धांत है। इसे '**सप्तभंगी नय**' भी कहते हैं। इसके अनुसार हर ज्ञान सापेक्ष (Relative) होता है। किसी भी बात को पूर्ण सत्य न कहकर उसके साथ '**स्यात्**' (शायद/संभवतः) लगाना चाहिए।

## SYADVADA: THE JAIN CONCEPT OF MANY-SIDED TRUTH THE ELEPHANT AND BLIND MEN ANALOGY



### 5. जैन संगीतियाँ (Councils) एवं विभाजन

संगीति	समय	स्थान	अध्यक्ष	परिणाम
प्रथम	300 ई.पू.	पाटलिपुत्र	स्थूलभद्र	जैन धर्म दिगंबर और श्वेतांबर में विभाजित हुआ। 12 अंगों का संकलन।
द्वितीय	512 ई.	वल्लभी (गुजरात)	देवर्धि क्षमाश्रमण	जैन आगमों (धर्मग्रंथों) को अंतिम रूप दिया गया।

### 6. जैन धर्म की 'व्यावहारिक अहिंसा' और समाज

जैन धर्म ने केवल पशु वध का विरोध नहीं किया, बल्कि 'अहिंसा' को एक सूक्ष्म मनोवैज्ञानिक धरातल पर स्थापित किया। खेती में जीवों की हत्या के कारण जैनियों ने व्यापार (Commerce) को प्राथमिकता दी, जिससे मध्यकाल में भारत की अर्थव्यवस्था को एक समृद्ध वर्ग मिला। स्याद्धाद का सिद्धांत आज के 'लोकतंत्र' और 'सहिष्णुता' के लिए प्रासंगिक है, क्योंकि यह स्वीकार करता है कि दूसरे का विचार भी सत्य हो सकता है। RPSC परीक्षाओं में अनेकांतवाद और स्याद्धाद के बीच के सूक्ष्म अंतर पर प्रश्न पूछे जाते रहे हैं।

### 7. महत्वपूर्ण तथ्य (Important Notes)

- **तथ्य: लेखन/संधारा (Sallekhana):** उपवास द्वारा स्वेच्छा से प्राण त्यागने की विधि। चंद्रगुप्त मौर्य ने श्रवणबेलगोला में इसी विधि से प्राण त्यागे थे।
- **तथ्य: अनंत चतुष्टय:** कैवल्य प्राप्त करने के बाद प्राप्त होने वाले चार गुण (अनंत ज्ञान, दर्शन, वीर्य, सुख)।
- **नोट:** जैन धर्म 'ईश्वर' को नहीं मानता लेकिन 'आत्मा' के अस्तित्व को स्वीकार करता है। यह **पुनर्जन्म** और **कर्मवाद** में विश्वास रखता है।
- **विरोधाभास:** श्वेतांबर 19वें तीर्थंकर **मल्लिनाथ** को 'स्त्री' मानते हैं, जबकि दिगंबर उन्हें 'पुरुष' मानते हैं।

## 8. त्वरित संदर्भ तालिका

शब्द / संकल्पना	अर्थ / महत्व
आगम	जैन धर्मग्रंथों का सामूहिक नाम।
प्रतीत्यसमुत्पाद	(यह बौद्ध धर्म से है, जैन से भ्रमित न हों)।
पुद्गल	जैन दर्शन में 'जड़' या भौतिक तत्व।
निर्जरा	संचित कर्मों का विनाश।
संवर	नए कर्मों का जीव की ओर प्रवाह रुकना।

wincompete



1. महाबोधि मंदिर, बोधगया: ज्ञान प्राप्ति (संबोधि) का प्रतीक।



2. धमेक स्तूप, सारनाथ: प्रथम उपदेश (धर्मचक्रप्रवर्तन) का स्थल।



3. अजंता चैत्य गुहा: बौद्ध पूजा स्थल और स्थापत्य (हीनयान-महायान समन्वय)।



4. गांधार शैली की बुद्ध प्रतिमा: महायान में मूर्ति पूजा का उदय (कुषाण काल)।



5. त्रिपिटक पांडुलिपि: बौद्ध धर्म के मूल ग्रंथ (सुत्त, विनय, अभिधम्म)।

## अध्याय 7: बौद्ध धर्म: गौतम बुद्ध, दर्शन और संगीतियाँ

### 1. गौतम बुद्ध: जीवन की महत्वपूर्ण घटनाएँ

गौतम बुद्ध को 'एशिया का ज्योति पुंज' (Light of Asia) कहा जाता है। उनके जीवन की पाँच प्रमुख घटनाओं को विशिष्ट प्रतीकों से जोड़ा गया है:

घटना	नाम	स्थान	प्रतीक
जन्म (563 ई.पू.)	—	लुम्बिनी (कपिलवस्तु)	कमल व सांड
गृह त्याग	महाभिनिष्क्रमण	—	घोड़ा (कन्धक)
ज्ञान प्राप्ति	संबोधि	बोधगया (निरंजना नदी)	पीपल (बोधिवृक्ष)
प्रथम उपदेश	धर्मचक्रप्रवर्तन	सारनाथ (ऋषिपत्तनम)	चक्र
मृत्यु (483 ई.पू.)	महापरिनिर्वाण	कुशीनगर	स्तूप

### 2. बौद्ध धर्म के सिद्धांत और दर्शन

#### A. चार आर्य सत्य (Four Noble Truths):

बुद्ध के दर्शन का सार इन चार सत्यों में निहित है:

- दुःख:** संसार दुःखमय है।
- दुःख समुदाय:** दुःख का कारण 'तृष्णा' (इच्छा) है।
- दुःख निरोध:** दुःख का अंत संभव है।
- दुःख निरोध गामिनी प्रतिपदा:** दुःख निवारण का मार्ग (अष्टांगिक मार्ग)।

#### B. प्रतीत्यसमुत्पाद (Dependent Origination):

यह बौद्ध दर्शन का 'कारण-कार्य' सिद्धांत है। इसका अर्थ है— "एक वस्तु के होने पर दूसरी वस्तु की उत्पत्ति"।

- इसे बौद्ध धर्म का 'मध्यम मार्ग' भी कहते हैं क्योंकि यह 'शाश्वतवाद' और 'उच्छेदवाद' के बीच का मार्ग है।

- इसमें 12 कड़ियाँ (द्वादश निदान) होती हैं, जो जन्म-मरण के चक्र को समझाती हैं।

### C. अष्टांगिक मार्ग (Eightfold Path):

निर्वाण प्राप्ति हेतु बुद्ध ने आठ मार्ग बताए, जिन्हें तीन स्कंधों (प्रज्ञा, शील, समाधि) में बाँटा गया है:

- सम्यक् दृष्टि, सम्यक् संकल्प, सम्यक् वाक, सम्यक् कर्मान्त, सम्यक् आजीव, सम्यक् व्यायाम, सम्यक् स्मृति और सम्यक् समाधि।

### 3. बौद्ध संगीतियाँ (Buddhist Councils)

बौद्ध धर्म के प्रसार और मतभेदों को सुलझाने के लिए चार प्रमुख संगीतियाँ आयोजित की गईं:

संगीति	समय	स्थान	शासक	अध्यक्ष	परिणाम
प्रथम	483 ई.पू.	राजगृह	अजातशत्रु	महाकस्सप	सुत्त और विनय पिटक का संकलन।
द्वितीय	383 ई.पू.	वैशाली	कालाशोक	सबकामनी	'स्थविर' और 'महासांघिक' में विभाजन।
तृतीय	250 ई.पू.	पाटलिपुत्र	अशोक	मोग्गलिपुत्त तिस्स	अभिधम्म पिटक का संकलन।
चतुर्थ	प्रथम शताब्दी	कुंडलवन (कश्मीर)	कनिष्क	वसुमित्र	बौद्ध धर्म हीनयान और महायान में विभाजित।

wincompete

#### 4. हीनयान बनाम महायान (प्रमुख अंतर)

विशेषता	हीनयान (Hinayana)	महायान (Mahayana)
अर्थ	निम्न मार्ग (रूढ़िवादी)	उत्कृष्ट मार्ग (परिवर्तनवादी)
बुद्ध का स्वरूप	एक महापुरुष (मानव)	ईश्वर का अवतार
पूजा पद्धति	प्रतीकों की पूजा	मूर्ति पूजा की शुरुआत
आदर्श	अर्हत् पद प्राप्त करना	बोधिसत्व (दूसरों का कल्याण)
भाषा	पाली	संस्कृत
क्षेत्र	श्रीलंका, बर्मा, थाईलैंड	चीन, जापान, कोरिया

#### 5. विश्लेषण: बौद्ध धर्म की वैश्विक स्वीकार्यता का कारण

बौद्ध धर्म ने तत्कालीन समाज में व्याप्त जटिल वर्ण व्यवस्था और पशु बलि के विरुद्ध एक 'तार्किक' और 'मध्यम मार्ग' प्रस्तुत किया। बुद्ध ने 'अप्य दीपो भव' (अपना दीपक स्वयं बनो) के माध्यम से व्यक्ति की स्वतंत्रता पर बल दिया। प्रतीत्यसमुत्पाद का वैज्ञानिक सिद्धांत और पाली भाषा (जनभाषा) का प्रयोग इसके तीव्र प्रसार के मुख्य कारण बने। सम्राट अशोक और कनिष्क जैसे शासकों के संरक्षण ने इसे एक 'विश्व धर्म' के रूप में स्थापित किया। **प्रतीत्यसमुत्पाद** को बौद्ध दर्शन की 'आधारशिला' के रूप में चिह्नित किया जाता है।

#### 6. महत्वपूर्ण तथ्य (Important Notes)

- **तथ्य: त्रिपिटक:** बौद्ध धर्म के मूल ग्रंथ (सुत्त पिटक- बुद्ध के उपदेश, विनय पिटक- संघ के नियम, अभिधम्म पिटक- दार्शनिक व्याख्या)।
- **तथ्य: जातक कथाएँ:** बुद्ध के पूर्व जन्मों की काल्पनिक कहानियाँ (संख्या लगभग 550)।
- **नोट:** बौद्ध धर्म **अनीश्वरवादी** और **अनात्मवादी** (आत्मा को नहीं मानता) है, लेकिन यह **पुनर्जन्म** में विश्वास रखता है।

- **विरोधाभास:** हीनयान बुद्ध को केवल गुरु मानता है, जबकि महायान ने बुद्ध की मूर्तियाँ बनाकर उन्हें देवता के रूप में पूजना प्रारंभ किया, जो कालांतर में ब्राह्मण धर्म के साथ समन्वय का कारण बना।

## 7. त्वरित संदर्भ तालिका (Quick Scan)

शब्द / पद	अर्थ / महत्व
चैत्य	बौद्धों का पूजा स्थल / मंदिर।
विहार	भिक्षुओं का निवास स्थान।
उपसंपदा	बौद्ध संघ में प्रवेश की प्रक्रिया।
शून्यवाद	नागार्जुन द्वारा प्रतिपादित (माध्यमिक सूत्र)।
वज्रयान	बौद्ध धर्म की तांत्रिक शाखा।

wincompete



ऊपरी पंक्ति (बाएँ से दाएँ): 1. महात्मा बुद्ध (ध्यान मुद्रा) 2. भगवान बुद्ध (उपदेश मुद्रा) 3. भगवान महावीर स्वामी मध्य पंक्ति (बाएँ से दाएँ): 4. साँची का महान स्तूप  
5. गांधार कला शैली 6. गोमटेश्वर (बाहुबली) प्रतिमा नीची पंक्ति (विस्तृत चित्र): 7. श्रमण परंपरा और संगोष्ठी

## बौद्ध एवं जैन धर्म का तुलनात्मक विश्लेषण और प्रभाव

### 1. समानताएँ (Commonalities)

- दोनों धर्मों के प्रवर्तक क्षत्रिय राजकुमार थे जिन्होंने ब्राह्मणवादी प्रभुत्व को चुनौती दी।
- दोनों ने 'वेदों की अपौरुषेयता' को नकारा और कर्मकांडों का विरोध किया।
- दोनों ने 'निर्वाण/मोक्ष' के लिए पवित्र जीवन और नैतिकता पर बल दिया।
- दोनों ने जनभाषा (पाली और प्राकृत) का प्रयोग किया।

## 2. प्रमुख अंतर (Differences)

बिंदु	जैन धर्म	बौद्ध धर्म
अहिंसा	अत्यंत कठोर (खेती भी वर्जित)।	व्यावहारिक (मध्यम मार्ग)।
आत्मा	आत्मा के अस्तित्व को मानता है।	'अनात्मवादी' (आत्मा को नहीं मानता)।
मोक्ष का मार्ग	कठोर तपस्या और कायाक्लेश (संलेखना)।	अष्टांगिक मार्ग (मध्यम प्रतिपदा)।
प्रसार	केवल भारत तक सीमित रहा।	एक 'विश्व धर्म' के रूप में उभरा।

## 3. पतन के कारण और प्रभाव

- **पतन:** कालांतर में इन धर्मों में वही बुराइयाँ आ गईं जिनके विरुद्ध इन्होंने जन्म लिया था (जैसे- मूर्ति पूजा, भ्रष्टाचार)। हिंदू धर्म में 'श्रीमद्भागवत' और 'शंकराचार्य' के अद्वैतवाद ने इन धर्मों की मुख्य विशेषताओं को आत्मसात कर लिया।
- **प्रभाव:** \* **स्थापत्य:** स्तूप (सांची, भरहुत), चैत्य और विहारों का विकास।
  - **कला:** गांधार और मथुरा कला शैलियों का उदय।
  - **साहित्य:** त्रिपिटक और आगम साहित्य के माध्यम से क्षेत्रीय भाषाओं का विकास।

## 4. विश्लेषण: 'श्रमण' बनाम 'ब्राह्मण' संघर्ष का सार

छठी शताब्दी ई.पू. की धार्मिक क्रांति केवल परलोक सुधारने का प्रयास नहीं थी, बल्कि यह एक 'सामाजिक लोकतंत्र' की पुकार थी। श्रमण परंपरा (जैन, बौद्ध, आजीवक) ने 'जन्म' के स्थान पर 'कर्म' को प्रधानता दी। RPSC की दृष्टि से यह समझना महत्वपूर्ण है कि '**मध्यम मार्ग**' ने जहाँ बौद्ध धर्म को वैश्विक बनाया, वहीं जैन धर्म की '**अहिंसा की कठोरता**' ने उसे भारत के व्यापारिक समुदायों तक सीमित रखा। इन धर्मों ने ही भारतीय समाज में 'सहिष्णुता' और 'तर्क' के बीज बोए।

## 5. महत्वपूर्ण तथ्य (Important Notes)

- **तथ्य:** '**अनैकांतवाद**' जैन दर्शन का आधार है, जबकि '**प्रतीत्यसमुत्पाद**' बौद्ध दर्शन का।
- **तथ्य:** बुद्ध ने अपने सर्वाधिक उपदेश **श्रावस्ती** (कोशल की राजधानी) में दिए थे।
- **नोट:** सम्राट हर्ष के समय तक बौद्ध धर्म अपनी मौलिकता खोने लगा था और 'वज्रयान' जैसी तांत्रिक शाखाओं का उदय हो चुका था।
- **विरोधाभास:** जहाँ बुद्ध ईश्वर के अस्तित्व पर मौन रहे, वहीं कालांतर में महायान शाखा ने बुद्ध को ही 'ईश्वर' के रूप में पूजना शुरू कर दिया।

## 6. त्वरित संदर्भ तालिका

संप्रदाय	प्रवर्तक	मुख्य दर्शन
आजीवक	मक्खलि गोसाल	नियतिवाद (भाग्य)।
लोकायत	चार्वाक	भौतिकवाद (प्रत्यक्ष ही सत्य)।
बौद्ध	गौतम बुद्ध	मध्यम मार्ग / क्षणिकवाद।
जैन	महावीर स्वामी	स्याद्वाद / अनेकांतवाद।

### अन्य नास्तिक संप्रदाय: आजीवक, चार्वाक एवं श्रमण मत

बुद्ध और महावीर के अलावा भी इस काल में कई 'नास्तिक' (वेदों को न मानने वाले) संप्रदाय थे जिन्होंने तत्कालीन बौद्धिक जगत को मथ दिया था।

#### 1. आजीवक संप्रदाय (मक्खलि गोसाल)

यह संप्रदाय बौद्ध और जैन धर्म का समकालीन और प्रमुख प्रतिद्वंद्वी था।

- **नियतिवाद (Fatalism):** इनका मानना था कि संसार की हर वस्तु 'भाग्य' या 'नियति' द्वारा नियंत्रित है। मानव प्रयास का कोई महत्व नहीं है।
- **ऐतिहासिक संदर्भ:** मौर्य सम्राट **अशोक** और उनके पौत्र **दशरथ** ने गया के पास 'बराबर की पहाड़ियों' में आजीवक भिक्षुओं के लिए गुफाओं का निर्माण करवाया था।

#### 2. चार्वाक दर्शन (लोकायत मत)

यह भारत का प्राचीनतम 'भौतिकवादी' दर्शन है। इसके प्रवर्तक **चार्वाक** (या बृहस्पति) माने जाते हैं।

- **सिद्धांत:** "जब तक जियो सुख से जियो, ऋण लेकर भी घी पियो" (यावज्जीवेत्सुखं जीवेत् ऋणं कृत्वा घृतं पिबेत्)। यह दर्शन पुनर्जन्म, स्वर्ग-नरक और आत्मा के अस्तित्व को पूरी तरह नकारता है।
- **प्रमाण:** यह केवल 'प्रत्यक्ष' को ही प्रमाण मानता है।

#### 3. अन्य श्रमण दार्शनिक

- **अजित केसकंबली:** उच्छेदवाद (भौतिकवाद का प्रारंभिक रूप)। मृत्यु के बाद सब समाप्त हो जाता है।
- **पूरण कस्सप:** अक्रियावाद। कर्मों का कोई फल नहीं होता।
- **पकुध कच्चायन:** नित्यत्ववाद। शरीर सात तत्वों से बना है जो कभी नष्ट नहीं होते।

## अध्याय 9: अन्य नास्तिक संप्रदाय



1. बराबर की गुफाएं: आजीवक संप्रदाय के लिए मौर्य सम्राट अशोक द्वारा निर्मित (ऐतिहासिक फोटो)।



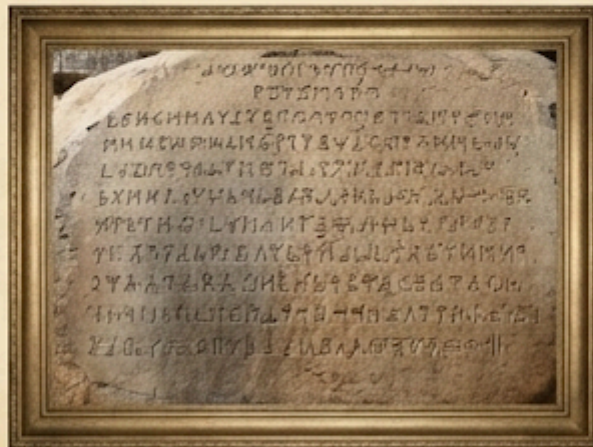
2. श्रमण परंपरा: विभिन्न दार्शनिक मतों के तपस्वी (लघुचित्र)।



3. चार्वाक दर्शन: 'यावज्जीवेत्सुखं जीवेत्' (जब तक जियो सुख से जियो) - भौतिकवाद का प्रतीक (पांडुलिपि चित्रण)।



4. तपस्वी मूर्तिकला: तत्कालीन श्रमण दार्शनिकों का एक रूप (गंधार शैली)।



5. अशोक का शिलालेख: धार्मिक सहिष्णुता और विभिन्न संप्रदायों का उल्लेख (ऐतिहासिक अभिलेख)।

## Chapter 8



1. लोहे का प्रयोग और कृषि क्रांति:  
अधिशेष उत्पादन का आधार  
(पुरातात्विक साक्ष्य)



2. वैश्यों का उदय: व्यापार और  
'आहत सिक्के' (मुद्राशास्त्र)



3. द्वितीय नगरीकरण और महाजनपद: राजगृह जैसे नगरों का उदय  
(ऐतिहासिक स्थल)

## अध्याय 11: मौर्य साम्राज्य: स्थापना, प्रशासन एवं अशोक का धम्म

### 1. मौर्य साम्राज्य की स्थापना एवं विस्तार

मौर्य वंश ने मगध के नंद वंश के अंतिम शासक धनानंद को अपदस्थ कर भारत में एक नए युग की शुरुआत की।

- **चंद्रगुप्त मौर्य (322-298 ई.पू.):** कौटिल्य (चाणक्य) की सहायता से साम्राज्य की नींव रखी।
  - **सेल्यूकस निकेटर से युद्ध:** 305 ई.पू. में यूनानी शासक सेल्यूकस को पराजित किया, जिसके परिणामस्वरूप हेरात, कंधार, काबुल और मकरान का क्षेत्र मौर्यों को प्राप्त हुआ।
  - **जैन धर्म का प्रभाव:** जीवन के अंतिम समय में भद्रबाहु से दीक्षा लेकर **श्रवणबेलगोला** (कर्नाटक) में संलेखना विधि से प्राण त्यागे।
- **बिन्दुसार (298-273 ई.पू.):** इन्हें 'अमित्रघात' (शत्रुओं का नाश करने वाला) कहा जाता है। इनके दरबार में सीरियाई शासक एंटियोकस प्रथम ने **डायमेकस** नामक राजदूत भेजा था।

### 2. सम्राट अशोक (273-232 ई.पू.) और उसका 'धम्म'

अशोक के शासनकाल में मौर्य साम्राज्य अपनी सांस्कृतिक और नैतिक पराकाष्ठा पर पहुँचा।

- **कलिंग युद्ध (261 ई.पू.):** शासन के 8वें वर्ष में हुए इस युद्ध के नरसंहार ने अशोक का हृदय परिवर्तित कर दिया। उन्होंने 'भेरीघोष' के स्थान पर '**धम्मघोष**' को अपनाया।
- **अशोक का धम्म:** यह कोई नया धर्म नहीं था, बल्कि एक '**नैतिक आचार संहिता**' थी।
  - **परिभाषा:** अपने दूसरे और सातवें स्तंभ लेख में अशोक ने धम्म की व्याख्या की है— "अपासीनवे बहुकयाने दया दाने सचे सोचये।" (पाप से मुक्ति, लोक-कल्याण, दया, दान, सत्य और शुद्धि)।
  - **धम्म महामात्र:** धम्म के प्रचार-प्रसार हेतु नियुक्त विशेष अधिकारी।

### 3. अशोक के अभिलेख: पत्थर पर उत्कीर्ण इतिहास

भारत में शिलालेखों का प्रचलन सर्वप्रथम अशोक ने ही शुरू किया।

- **भाषा व लिपि:** अधिकांश अभिलेख प्राकृत भाषा में हैं। लिपियाँ: **ब्राह्मी** (संपूर्ण भारत), **खरोष्ठी** (उत्तर-पश्चिम), **अरामेइक और ग्रीक** (अफगानिस्तान)।
- **प्रमुख शिलालेख:**
  - **13वाँ शिलालेख:** कलिंग युद्ध का वर्णन और पड़ोसी राज्यों का उल्लेख।
  - **भाब्रू शिलालेख (राजस्थान):** इसमें अशोक ने स्वयं को 'मगधाधिराज' कहा है और बुद्ध, धम्म व संघ के प्रति आस्था प्रकट की है।
  - **रुम्मिनदेई स्तंभ लेख:** बुद्ध के जन्म स्थान (लुम्बिनी) का उल्लेख और कर में छूट का विवरण।

[Image showing the distribution and location of Ashoka's 14 Major Rock Edicts across South Asia]

## 4. मौर्य प्रशासन एवं कौटिल्य का सप्तांग सिद्धांत

मौर्य प्रशासन अत्यंत केंद्रीकृत और विस्तृत था।

- **सप्तांग सिद्धांत:** कौटिल्य ने राज्य के सात अंग बताए हैं, जिन्हें 'सावयव सिद्धांत' (Organic Theory) कहा जाता है:
  - स्वामी (राजा)
  - अमात्य (मंत्री)
  - जनपद (क्षेत्र व जनसंख्या)
  - दुर्ग (किला)
  - कोश (खजाना)
  - दण्ड (सेना)
  - मित्र
- **प्रशासनिक ढाँचा:**
  - **तीर्थ:** शीर्षस्थ अधिकारियों को 'तीर्थ' कहा जाता था (संख्या 18)। जैसे— पुरोहित, सेनापति, युवराज।
  - **अध्यक्ष:** विभिन्न विभागों के प्रमुख (संख्या 26)। जैसे— **सीताध्यक्ष** (कृषि), **पणयाध्यक्ष** (व्यापार), **सूनाध्यक्ष** (बूचड़खाना)।
  - **गुप्तचर व्यवस्था:** इन्हें 'गूढ़ पुरुष' कहा जाता था। दो प्रकार के थे: **संस्था** (स्थिर) और **संचरा** (भ्रमणशील)।

## 5. विश्लेषणात्मक विवरण (Analysis Box)

**विश्लेषण: मौर्य प्रशासन की प्रासंगिकता**

मौर्य शासन प्रणाली भारत की पहली संगठित नौकरशाही (Bureaucracy) थी। कौटिल्य का 'अर्थशास्त्र' केवल राजनीति का ग्रंथ नहीं है, बल्कि यह आर्थिक प्रबंधन और लोक-कल्याण का मैनुअल है। अशोक द्वारा शिलालेखों के माध्यम से जनता से 'सीधा संवाद' करना आधुनिक 'Public Relations' का प्राचीन रूप है। अशोक का धम्म साम्राज्य की सांस्कृतिक एकता बनाए रखने का एक राजनैतिक उपकरण भी था। RPSC मुख्य परीक्षा में मौर्य प्रशासन के केंद्रीकृत स्वरूप और सप्तांग सिद्धांत के व्यावहारिक पक्ष पर प्रश्न पूछे जाते हैं।

## 6. महत्वपूर्ण तथ्य एवं विरोधाभास (Important Notes)

- **तथ्य:** मेगस्थनीज (मेगास्थनीज) ने अपनी पुस्तक 'इंडिका' में भारतीय समाज को सात जातियों में विभाजित किया है और दास प्रथा के अभाव का उल्लेख किया है।
- **तथ्य:** मौर्य काल में राजकीय भूमि को 'सीता' कहा जाता था।
- **नोट:** जेम्स प्रिंसेप ने 1837 में सर्वप्रथम अशोक के अभिलेखों को पढ़ने में सफलता प्राप्त की थी।
- **विरोधाभास:** कौटिल्य दास प्रथा के अस्तित्व को स्वीकार करते हैं, जबकि मेगस्थनीज इसके विपरीत मत देते हैं। यह विरोधाभास संभवतः मेगस्थनीज की यूनानी दासों के प्रति कठोर परिभाषा के कारण था।

## 7. त्वरित संदर्भ तालिका (Quick Scan)

प्रश्न का केंद्र	उत्तर / तथ्य
मौर्यों का राजकीय चिन्ह	मयूर (मोर)

सुदर्शन झील का निर्माण	पुष्यगुप्त वैश्य (चंद्रगुप्त मौर्य के समय)
अशोक का नाम 'अशोक'	मास्की एवं गुर्जरा अभिलेखों में
प्रमुख बंदरगाह	ताम्रलिप्ति (पूर्वी तट), भड़ौच (पश्चिमी तट)
शिक्षा का प्रसिद्ध केंद्र	तक्षशिला

## अध्याय 12: सातवाहन और कुषाण राजवंश: दक्कन और उत्तर-पश्चिम का वैभव

यह सामग्री नासिक प्रशस्ति, नानाघाट अभिलेख, कनिष्क के सिक्कों, बुद्धचरित और डॉ. ए.एस. अल्तेकर व डॉ. नीलकंठ शास्त्री के प्रामाणिक शोधों पर आधारित है।

### 1. कुषाण राजवंश: भारत-मध्य एशिया का संगम

कुषाण मध्य एशिया की 'यू-ची' (Yuezhi) जाति की पाँच शाखाओं में से एक थे। इन्होंने मौर्योत्तर भारत में एक विशाल अंतरराष्ट्रीय साम्राज्य की स्थापना की।

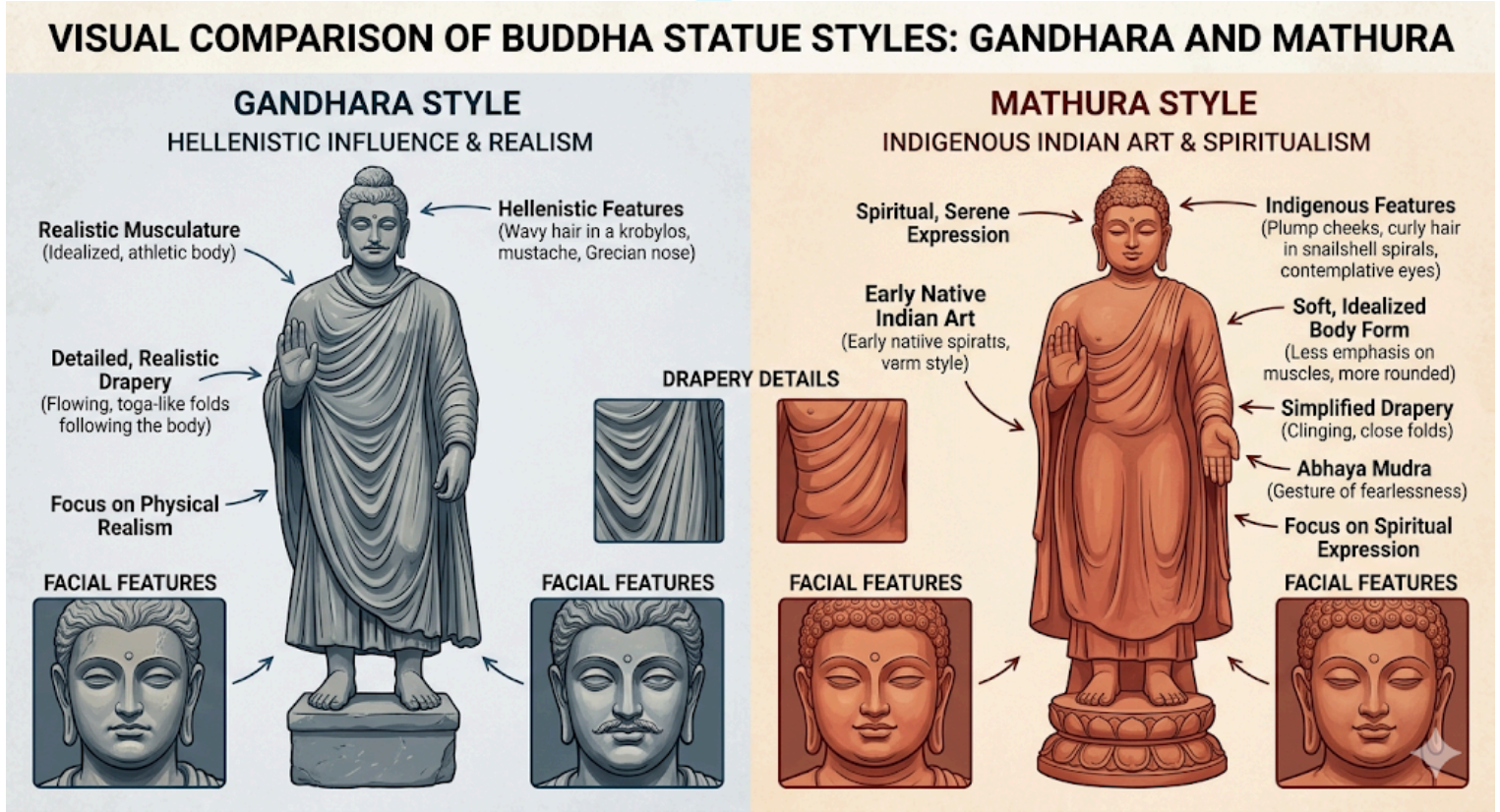
- **कुजुल कडफिसेस:** कुषाण वंश का संस्थापक। इसने केवल तांबे के सिक्के जारी किए।
- **विम कडफिसेस:** इसे भारत में कुषाण सत्ता का वास्तविक संस्थापक माना जाता है। इसने भारी मात्रा में **स्वर्ण सिक्के** जारी किए और 'महेश्वर' की उपाधि धारण की।
- **कनिष्क महान (78-101 ईस्वी):** कुषाणों का सबसे प्रतापी शासक।
  - **सक संवत (Saka Era):** कनिष्क ने अपने राज्याभिषेक के उपलक्ष्य में **78 ईस्वी** में 'सक संवत' चलाया, जो आज भारत का राष्ट्रीय कैलेंडर है।
  - **राजधानी:** प्रथम राजधानी **पुरुषपुर (पेशावर)** और द्वितीय राजधानी **मथुरा** थी।
  - **रेशम मार्ग (Silk Road):** कनिष्क का चीन से रोम जाने वाले मुख्य रेशम मार्ग पर नियंत्रण था। इससे होने वाली आय ने कुषाणों को प्राचीन काल में सर्वाधिक शुद्ध स्वर्ण सिक्के जारी करने में सक्षम बनाया।

### 2. कुषाणकालीन बौद्ध धर्म और कला

कनिष्क का काल भारतीय संस्कृति के वैश्विक प्रसार का युग था।

- **चतुर्थ बौद्ध संगीति:** कनिष्क के संरक्षण में कश्मीर के **कुंडलवन** में आयोजित हुई। अध्यक्ष- वसुमित्र, उपाध्यक्ष- अश्वघोष। यहीं बौद्ध धर्म **हीनयान और महायान** में विभाजित हुआ।
- **कला शैलियाँ:**

1. **गांधार कला:** इसे 'ग्रीको-बुद्धिस्ट' या 'इंडो-ग्रीक' शैली कहा जाता है। इसमें बुद्ध की मूर्तियाँ यूनानी देवता 'अपोलो' के समान शारीरिक शुद्धि और घुंघराले बालों वाली बनाई गईं। मुख्य केंद्र: तक्षशिला।
2. **मथुरा कला:** यह पूर्णतः स्वदेशी शैली थी। इसमें लाल बलुआ पत्थर का प्रयोग हुआ। इसी शैली में सर्वप्रथम बुद्ध की मानव रूप में प्रतिमा बनाई गई।



### 3. सातवाहन राजवंश: दक्कन के गौरव (Andhras)

मौर्यों के पतन के बाद दक्षिण भारत (दक्कन) में सातवाहनों ने अपनी शक्ति स्थापित की। इन्हें पुराणों में 'आन्ध्रभृत्य' कहा गया है।

- **सिमुक:** सातवाहन वंश का संस्थापक।
- **गौतमीपुत्र शातकर्णी (23वाँ शासक):** सातवाहन वंश का सबसे महान शासक।
  - **नासिक प्रशस्ति:** इसकी माता गौतमी बलश्री के इस अभिलेख में इसे 'एक ब्राह्मण' (अद्वितीय ब्राह्मण) और 'क्षत्रियों के मान-मर्दन करने वाला' कहा गया है।
  - उसने शक शासक नहपान को पराजित किया (जोगलथम्बी मृदभाण्ड साक्ष्य)।
- **यज्ञश्री शातकर्णी:** अंतिम महान शासक। इसके सिक्कों पर 'जलयान' (जहाज) का चित्र अंकित है, जो समुद्री व्यापार और नौसैनिक शक्ति का सूचक है।

### 4. सातवाहन प्रशासन, समाज और संस्कृति

सातवाहनों ने उत्तर और दक्षिण भारत के बीच सांस्कृतिक समन्वय का ऐतिहासिक कार्य किया।

- **मातृसत्तात्मक प्रभाव:** सातवाहन राजा अपने नाम के साथ अपनी **माता का नाम** जोड़ते थे (जैसे- गौतमीपुत्र, वशिष्ठीपुत्र), यद्यपि राजसिंहासन पितृसत्तात्मक (जेष्ठ पुत्र को) ही मिलता था।
- **भूमि दान की प्रथा:** भारत में ब्राह्मणों और बौद्ध भिक्षुओं को 'कर-मुक्त भूमि दान' देने की प्रथा सर्वप्रथम सातवाहनों ने शुरू की (नानाघाट अभिलेख - रानी नागनिका)। इसी प्रथा ने आगे चलकर 'सामंतवाद' को जन्म दिया।
- **अर्थव्यवस्था:** इन्होंने तांबे, कांसे और चांदी के साथ-साथ 'सीसे' (Lead) और 'पोटिन' के सिक्के प्रचुर मात्रा में जारी किए। (RPSC का प्रिय प्रश्न)।
- **साहित्य:** इस काल की राजकीय भाषा प्राकृत थी।

- राजा हाल ने 'गाथा सप्तशती' (प्राकृत काव्य) की रचना की।
- गुणाढ्य ने 'वृहत्कथा' लिखी।

## 5. विश्लेषण: कुषाण और सातवाहनों का ऐतिहासिक महत्व

कुषाणों ने जहाँ भारत को मध्य एशिया और रोमन साम्राज्य की वैश्विक अर्थव्यवस्था से जोड़ा, वहीं सातवाहनों ने मौर्यों के बाद दक्षिण में एक स्थिर राजनैतिक ढांचा प्रदान किया। कनिष्क का सक संवत् आज भी भारतीय काल-गणना का आधार है। सातवाहनों द्वारा शुरू की गई 'भूमि दान' की व्यवस्था ने भारतीय मध्यकाल के सामाजिक-आर्थिक स्वरूप को पूरी तरह बदल दिया। स्थापत्य की दृष्टि से, सातवाहनों के काल में ही **अमरावती कला शैली** का विकास हुआ, जो अपनी सफेद संगमरमर की रिलीफ कला के लिए प्रसिद्ध है।

## 6. महत्वपूर्ण तथ्य

- **तथ्य: अश्वघोष** (बुद्धचरित के लेखक), **नागार्जुन** (माध्यमिक सूत्र - शून्यवाद के जनक), **चरक** (चिकित्सक) और **वसुमित्र** कनिष्क के दरबारी विद्वान थे।
- **तथ्य:** नागार्जुन को '**भारत का आइंस्टीन**' कहा जाता है क्योंकि उन्होंने सापेक्षता के सिद्धांत (Theory of Relativity) जैसा विचार शून्यवाद में दिया था।
- **नोट:** सातवाहनों की राजधानी **प्रतिष्ठान (पैठण)** महाराष्ट्र के औरंगाबाद जिले में गोदावरी नदी के तट पर स्थित थी।
- **विरोधाभास:** कुछ इतिहासकारों के अनुसार सक संवत् शकों ने शुरू किया, परंतु अधिकांश आधुनिक शोध इसे कनिष्क (78 ई.) से जोड़ते हैं। कुषाणों ने 'शुद्ध' स्वर्ण सिक्के चलाए, जबकि गुप्तों ने 'सर्वाधिक संख्या' में।

प्रश्न का केंद्र	उत्तर / तथ्य
भारत का राष्ट्रीय कैलेंडर	शक संवत् (78 ईस्वी)
सीसे के सिक्के	सातवाहन राजवंश
तमिल काव्य का इलियड	शिल्पादिकारम
शून्य का आविष्कारक	नागार्जुन (कनिष्क के समकालीन)
प्रथम संगम स्थल	मदुरै (अगस्त्य ऋषि अध्यक्ष)

## 7. त्वरित संदर्भ तालिका

प्रश्न का केंद्र	कुषाण राजवंश	सातवाहन राजवंश
राजकीय भाषा	संस्कृत (कनिष्क के समय उत्कर्ष)	प्राकृत
प्रमुख सिक्के	सर्वाधिक शुद्ध स्वर्ण सिक्के	सीसे (Lead) और पोटिन के सिक्के
कला शैली	गांधार एवं मथुरा कला	अमरावती कला
धार्मिक झुकाव	बौद्ध धर्म (महायान)	ब्राह्मण धर्म (वैदिक यज्ञ) एवं बौद्ध
प्रसिद्ध शासक	कनिष्क	गौतमीपुत्र शातकर्णी
प्रमुख अभिलेख	रबातक अभिलेख	नासिक और नानाघाट अभिलेख

## कुषाण, सातवाहन और संगम काल(REVISION)

### 1. कुषाण राजवंश और कनिष्क महान

कुषाण 'यू-ची' कबीले से संबंधित थे। कनिष्क इस वंश का सबसे प्रतापी शासक था।

- **कनिष्क (78-101 ईस्वी):** \* शक संवत (Saka Era): कनिष्क ने 78 ई. में अपने राज्याभिषेक के समय 'शक संवत' चलाया, जो वर्तमान में भारत का राष्ट्रीय कैलेंडर है।
  - **रेशम मार्ग (Silk Road):** चीन से रोमन साम्राज्य जाने वाले रेशम मार्ग के तीन मुख्य रास्तों पर कनिष्क का नियंत्रण था, जिससे साम्राज्य को भारी स्वर्ण प्राप्त हुआ।
  - **बौद्ध धर्म:** कनिष्क के समय कश्मीर के कुंडलवन में चतुर्थ बौद्ध संगीति हुई, जिसमें बौद्ध धर्म हीनयान और महायान में विभाजित हो गया।

- **कला के दो केंद्र:** 1. **गांधार कला:** यह 'इंडो-ग्रीक' शैली है। इसमें बुद्ध की मूर्तियाँ यूनानी देवता 'अपोलो' जैसी बनाई गईं।
- 2. **मथुरा कला:** यह विशुद्ध भारतीय शैली है। इसमें पहली बार बुद्ध की मानव रूप में मूर्तियाँ बनाई गईं।

## 2. सातवाहन राजवंश (दक्खिन के स्वामी)

मौर्यों के पतन के बाद दक्षिण भारत (दक्कन) में सातवाहनों ने अपनी सत्ता स्थापित की।

- **राजधानी:** प्रतिष्ठान या पैठण (महाराष्ट्र)।
- **गौतमीपुत्र शातकर्णी:** इस वंश का महानतम शासक। नासिक अभिलेख में इसे 'एक ब्राह्मण' और 'क्षत्रियों के मान-मर्दन करने वाला' कहा गया है। इसके घोड़ों ने 'तीन समुद्रों का पानी पिया' था।
- **विशिष्टता:** \* सातवाहनों ने **मातृसत्तात्मक समाज** की झलक दी (राजाओं के नाम के आगे माता का नाम, जैसे- गौतमीपुत्र)।
  - **भूमि दान की प्रथा:** ब्राह्मणों और बौद्ध भिक्षुओं को 'कर-मुक्त' भूमि दान देने का प्रथम अभिलेखीय साक्ष्य सातवाहनों के समय (नानाघाट अभिलेख) मिलता है।
  - **सिक्के:** इन्होंने चांदी और तांबे के साथ-साथ '**सीसे** (Lead) के सिक्के भी जारी किए।

## 3. संगम काल: दक्षिण भारत का स्वर्ण युग

कृष्णा और तुंगभद्रा नदियों के दक्षिण में स्थित क्षेत्र में तीन प्रमुख राजवंशों—चोल, चेर और पाण्ड्य का शासन था।

- **संगम:** 'संगम' का अर्थ है विद्वानों की परिषद। पाण्ड्य राजाओं के संरक्षण में **मदुरै** में तीन संगम आयोजित हुए।
- **प्रमुख राजवंश (मुवेन्तर):**
  - **चोल:** प्रतीक चिन्ह- **बाघ**। प्रसिद्ध शासक- करिकाल। राजधानी- उरैयुर (कपास व्यापार हेतु प्रसिद्ध)।
  - **पाण्ड्य:** प्रतीक चिन्ह- **मछली**। प्रसिद्ध शासक- नेडुंजेलियन। संगमों के संरक्षक।
  - **चेर:** प्रतीक चिन्ह- **धनुष**। प्रसिद्ध शासक- सेनगुट्टुवन (लाल चेर), जिसने 'कण्णगी पूजा' शुरू की।
- **साहित्य:** \* *तोलकाप्पियम*: तमिल व्याकरण।
  - *शिल्पादिकारम*: इलंगो अडिगल द्वारा रचित (नूपुर की कहानी)।
  - *मणिमेखलै*: सतनार द्वारा रचित।

## 4. विश्लेषण: उत्तर और दक्षिण का सांस्कृतिक सेतु

कुषाण काल जहाँ भारत को मध्य एशिया और यूरोप (रोम) के साथ व्यापारिक रूप से जोड़ता है, वहीं सातवाहनों ने उत्तर और दक्षिण भारत के बीच एक 'सांस्कृतिक सेतु' (Cultural Bridge) का कार्य किया। सातवाहनों द्वारा शुरू की गई 'भूमि दान' की प्रथा ने कालांतर में भारत में 'सामंतवाद' (Feudalism) के बीज बोए। संगम साहित्य दक्षिण भारत के सामाजिक स्तरीकरण और वहाँ की समृद्ध समुद्री व्यापारिक परंपरा का एकमात्र विश्वसनीय स्रोत है। RPSC परीक्षाओं में **कनिष्क की कला शैलियों** और **संगम साहित्य के मिलान** पर विशेष ध्यान दिया जाता है।

## 5. महत्वपूर्ण तथ्य एवं विरोधाभास (Important Notes)

- **तथ्य:** कुषाणों ने भारत में **सर्वाधिक शुद्ध स्वर्ण सिक्के** जारी किए, जबकि सर्वाधिक संख्या में स्वर्ण सिक्के गुप्तों ने जारी किए थे।
- **तथ्य:** **अश्वघोष** (बुद्धचरित के लेखक) और **चरक** (चरक संहिता) कनिष्क के दरबारी विद्वान थे।
- **नोट:** सातवाहनों की राजकीय भाषा **प्राकृत** थी और लिपि ब्राह्मी थी।
- **विरोधाभास:** कुछ विद्वान शक संवत् को शकों द्वारा शुरू किया मानते हैं, परंतु ऐतिहासिक साक्ष्य इसे कनिष्क के राज्याभिषेक (78 ई.) से जोड़ते हैं।

## 6. त्वरित संदर्भ तालिका

प्रश्न का केंद्र	उत्तर / तथ्य
भारत का राष्ट्रीय कैलेंडर	शक संवत (78 ईस्वी)
सीसे के सिक्के	सातवाहन राजवंश
तमिल काव्य का इलियड	शिल्पादिकारम
शून्य का आविष्कारक	नागार्जुन (कनिष्क के समकालीन)
प्रथम संगम स्थल	मदुरै (अगस्त्य ऋषि अध्यक्ष)

## अध्याय 13: गुप्त साम्राज्य: राजनीतिक अभ्युदय, प्रशासन एवं सांस्कृतिक स्वर्ण युग

यह सामग्री प्रयाग प्रशस्ति, महरौली लौह स्तंभ, फाह्यान के विवरण, पुरातात्विक सिक्कों और डॉ. आर.सी. मजूमदार, डॉ. ए.एस. अल्टेकर एवं डॉ. एस.आर. गोयल जैसे लब्धप्रतिष्ठ इतिहासकारों के शोधों पर आधारित है।

### 1. गुप्त वंश की स्थापना एवं प्रारंभिक शासक

मौर्यों के पतन और कुषाणों के हास के बाद, गुप्तों ने उत्तर भारत में राजनैतिक एकता पुनर्स्थापित की।

- **श्रीगुप्त (240-280 ईस्वी):** गुप्त वंश का आदिपुरुष। इसने 'महाराज' की उपाधि धारण की।
- **घटोत्कच:** श्रीगुप्त का पुत्र।
- **चंद्रगुप्त प्रथम (319-335 ईस्वी):** इन्होंने गुप्त वंश का **वास्तविक संस्थापक** माना जाता है।
  - **महाराजाधिराज:** इन्होंने महाराज के स्थान पर यह भव्य उपाधि धारण की।
  - **लिच्छवी संबंध:** लिच्छवी राजकुमारी 'कुमारदेवी' से विवाह कर अपनी शक्ति और प्रतिष्ठा में वृद्धि की। इनके 'राजा-रानी' प्रकार के स्वर्ण सिक्के प्रसिद्ध हैं।
  - **गुप्त संवत:** इन्होंने अपने राज्याभिषेक के उपलक्ष्य में **319-320 ईस्वी** में 'गुप्त संवत' चलाया।

### 2. समुद्रगुप्त (335-375 ईस्वी): भारत का नेपोलियन

इतिहासकार वी.ए. स्मिथ ने समुद्रगुप्त को 'भारत का नेपोलियन' कहा है। वह न केवल एक महान विजेता था, बल्कि कला और संगीत का संरक्षक भी था।

- **प्रयाग प्रशस्ति (Allahabad Pillar):** इसकी रचना समुद्रगुप्त के दरबारी कवि **हरिषेण** ने 'चम्पू शैली' (गद्य-पद्य मिश्रित) में की। यह समुद्रगुप्त की विजयों का सबसे प्रामाणिक स्रोत है।
- **विजय नीतियां (RPSC के लिए महत्वपूर्ण):**
  1. **आर्यावर्त की नीति:** उत्तर भारत के 9 राजाओं का पूर्ण उन्मूलन किया (**प्रसभोद्धरण**)।
  2. **दक्षिणापथ की नीति:** दक्षिण के 12 राजाओं के प्रति '**ग्रहणमोक्षानुग्रह**' की नीति अपनाई (अर्थात् जीतकर राज्य वापस लौटा दिए और केवल कर वसूला)।
  3. **आटविक राज्यों की विजय:** वन प्रदेशों के राजाओं को सेवक बनाया।
- **कला और धर्म:** सिक्कों पर उसे '**वीणा बजाते**' हुए दिखाया गया है। उसे 'कविराज' की उपाधि दी गई। उसने अश्वमेध यज्ञ किया और 'अश्वमेध पराक्रम' की उपाधि धारण की।

### 3. चंद्रगुप्त द्वितीय 'विक्रमादित्य' (380-412 ईस्वी)

समुद्रगुप्त के बाद उसका पुत्र चंद्रगुप्त द्वितीय सिंहासन पर बैठा, जिसका काल गुप्त साम्राज्य का चरम उत्कर्ष माना जाता है।

- **शकारि (Shakari):** उसने पश्चिमी भारत के अंतिम शक शासक 'रुद्रसिंह तृतीय' को पराजित कर शक सत्ता का अंत किया। इस विजय के उपलक्ष्य में उसने **चांदी के सिक्के** (व्याघ्र शैली) जारी किए।
- **वैवाहिक संधियाँ:** उसने नाग वंश और वाकाटक वंश (पुत्री प्रभावती गुप्त का विवाह रुद्रसेन द्वितीय से) के साथ संबंध बनाकर साम्राज्य को सुरक्षित किया।
- **नवरत्न (Nine Gems):** इसके दरबार में उज्जैन में 9 विद्वान थे:
  1. **कालिदास** (महाकवि)
  2. **धन्वंतरि** (चिकित्सक)
  3. **वराहमिहिर** (खगोलशास्त्री)
  4. **अमरसिंह** (कोषकार - अमरकोष)
  5. **क्षणपक** (फलित ज्योतिष)
  6. **शंकु** (वास्तुकार)
  7. **वेतालभट्ट** (जादूगर)
  8. **घटकर्पूर** (कवि)
  9. **वररुचि** (व्याकरणज्ञ)
- **चीनी यात्री फाह्यान:** इसके शासनकाल में फाह्यान भारत आया (399-414 ईस्वी)। उसने मध्य देश को 'ब्राह्मणों का देश' कहा और यहाँ की सुख-शांति की प्रशंसा की।

### 4. गुप्तकालीन प्रशासन: केंद्रीकरण एवं सामंतवाद का उदय

गुप्त प्रशासन मौर्यों की तुलना में कम कठोर और अधिक विकेंद्रीकृत था।

- **राजा का स्वरूप:** राजा को ईश्वर का प्रतिनिधि माना जाने लगा (परमभट्टारक, परमेश्वर की उपाधियाँ)।
- **प्रशासनिक इकाइयाँ:**
  - **देश/राष्ट्र:** सर्वोच्च इकाई (प्रमुख: गोप्ता)।
  - **भुक्ति (प्रांत):** प्रमुख को '**उपरिक**' कहा जाता था।
  - **विषय (जिला):** प्रमुख को '**विषयपति**' कहा जाता था। इसकी सहायता हेतु 'नगर श्रेष्ठी', 'सार्थवाह' जैसे नगर प्रतिनिधि होते थे।
  - **ग्राम:** सबसे छोटी इकाई (प्रमुख: ग्रामिक या महत्तर)।
- **प्रमुख अधिकारी:** \* **महासंधिविग्रहक:** युद्ध और शांति का मंत्री।
  - **कुमारामात्य:** सर्वोच्च श्रेणी के अधिकारी (आधुनिक IAS के समान)।
  - **दण्डपाशिक:** पुलिस विभाग का सर्वोच्च अधिकारी।

### 5. सामाजिक एवं आर्थिक जीवन

- **समाज:** वर्ण व्यवस्था जटिल हुई। फाह्यान के अनुसार 'चांडालों' (अस्पृश्यता) की स्थिति अत्यंत दयनीय थी। स्त्रियों की स्थिति में गिरावट आई (सती प्रथा का प्रथम साक्ष्य 510 ईस्वी के एरण अभिलेख से मिलता है)।
- **अर्थव्यवस्था:** \* **मुद्रा:** स्वर्ण सिक्कों को 'दीनार' और चांदी के सिक्कों को 'रुप्यक' कहा जाता था।
  - **कृषि:** अर्थव्यवस्था का मुख्य आधार। सिचाई हेतु 'अरघट्ट' (घंटी यंत्र) का प्रयोग होता था।
  - **व्यापार:** उज्जैन व्यापार का सबसे महत्वपूर्ण केंद्र था।

## 6. स्वर्ण युग: कला, साहित्य और विज्ञान

गुप्त काल की सबसे बड़ी विशेषता उसकी सांस्कृतिक प्रगति है।

- **वास्तु कला:** मंदिर निर्माण कला का जन्म इसी काल में हुआ।
  - **देवगढ़ का दशावतार मंदिर (ललितपुर):** पंचायतन शैली और 'शिखर' का प्रथम उदाहरण।
  - **भीतरगाँव मंदिर (कानपुर):** ईंटों से निर्मित मंदिर।
- **साहित्य:** पुराणों का वर्तमान स्वरूप में संकलन इसी काल में हुआ। कालिदास की अमर कृतियाँ (अभिज्ञान शाकुंतलम, रघुवंशम), विशाखदत्त (मुद्राराक्षस) और शूद्रक (मृच्छकटिकम) इसी युग की देन हैं।
- **विज्ञान:** \* **आर्यभट्ट:** 'आर्यभटीय' ग्रंथ। शून्य का सिद्धांत, पृथ्वी गोल है और सूर्य के चक्कर लगाती है—यह उन्होंने तभी प्रतिपादित किया।
  - **वराहमिहिर:** खगोल विज्ञान (बृहत्संहिता)।
  - **ब्रह्मगुप्त:** (राजस्थान के भीनमाल से संबंधित) - गुरुत्वाकर्षण के सिद्धांत का पूर्व आभास दिया।

## 7. विश्लेषण: गुप्त काल - एक रक्षात्मक समीक्षा

गुप्त काल को 'स्वर्ण युग' कहे जाने के पीछे मुख्य तर्क 'सांस्कृतिक पुनर्जागरण' है। जहाँ मौर्यों ने अखंड भारत का निर्माण किया, वहीं गुप्तों ने भारतीय 'आत्मा' (संस्कृति) को निखारा। हालाँकि, RPSC मुख्य परीक्षा के दृष्टिकोण से यह ध्यान रखना आवश्यक है कि यह 'स्वर्ण' केवल उच्च वर्गों तक सीमित था। इसी काल में सामंतवाद (Feudalism) की जड़ें गहरी हुईं, दास प्रथा और जातिवाद में कठोरता आई। आर्थिक रूप से स्वर्ण सिक्कों में मिलावट की शुरुआत परवर्ती गुप्तों के समय से देखी जा सकती है, जो साम्राज्य के पतन का संकेत था।

## 8. महत्वपूर्ण तथ्य (Important Notes)

- **तथ्य:** नालंदा विश्वविद्यालय की स्थापना **कुमारगुप्त प्रथम** (महेंद्रादित्य) ने की थी।
- **तथ्य:** हूणों के आक्रमण को **स्कंदगुप्त** ने विफल किया (भीतरी स्तंभ लेख)। सुदर्शन झील का पुनरुद्धार भी इसी ने कराया।
- **नोट:** गुप्त राजाओं का राजकीय चिन्ह 'गरुड़' था और वे परम भागवत (वैष्णव) थे।
- **विरोधाभास:** फाह्यान ने अपने विवरण में सम्राट चंद्रगुप्त द्वितीय के नाम का एक बार भी उल्लेख नहीं किया है। उसने केवल 'राजा' शब्द का प्रयोग किया है।
- **तथ्य:** गुप्त शासकों ने ही सर्वाधिक संख्या में स्वर्ण सिक्के जारी किए, लेकिन कुषाणों के सिक्के अधिक शुद्ध थे।

## 9. त्वरित संदर्भ तालिका

प्रश्न का केंद्र	उत्तर / तथ्य
वास्तविक संस्थापक	चंद्रगुप्त प्रथम

प्रयाग प्रशस्ति का लेखक	हरिषेण (समुद्रगुप्त का दरबारी)
शकारि / विक्रमादित्य	चंद्रगुप्त द्वितीय
नालंदा विश्वविद्यालय	कुमारगुप्त प्रथम
सती प्रथा का प्रथम उल्लेख	एरण अभिलेख (510 ईस्वी, भानुगुप्त)
भारतीय शेक्सपियर	कालिदास (गुप्तकालीन)

## अध्याय 14: दक्षिण भारत के राजवंश: चालुक्य, पल्लव और चोल (प्रशासन एवं कला)

यह सामग्री 'ऐहोल प्रशस्ति', 'उत्तरमेरुर अभिलेख', 'पेरियपुराणम्' और डॉ. के.ए. नीलकंठ शास्त्री एवं डॉ. रोमिला थापर के शोधों पर आधारित है।

### 1. वातापी के चालुक्य: दक्कन की शक्ति

चालुक्यों ने छठी से आठवीं शताब्दी के मध्य दक्कन (कर्नाटक) में एक सुदृढ़ साम्राज्य की स्थापना की।

- **पुलकेशिन द्वितीय (610-642 ईस्वी):** इस वंश का सबसे प्रतापी शासक।
  - **ऐहोल अभिलेख (Aihole Inscription):** इसके दरबारी कवि **रविकीर्ति** द्वारा रचित। इसमें पुलकेशिन द्वितीय द्वारा नर्मदा नदी के तट पर उत्तर भारत के सम्राट **हर्षवर्धन** को पराजित करने का वर्णन है।
  - **उपाधि:** 'परमेश्वर' और 'दक्षिणापथेश्वर'।
- **वास्तु कला:** चालुक्यों ने '**वेसर शैली**' (Vesara Style) को जन्म दिया, जो नागर और द्रविड़ शैलियों का सम्मिश्रण है।
  - **ऐहोल:** इसे 'भारतीय मंदिरों का पालना' (Cradle of Indian Temples) कहा जाता है। यहाँ का 'लाड़ खां मंदिर' प्रसिद्ध है।
  - **पट्टदकल:** यहाँ का 'विरुपाक्ष मंदिर' स्थापत्य का उत्कृष्ट नमूना है।

### 2. पल्लव राजवंश: द्रविड़ संस्कृति के अग्रदूत

कांची (तमिलनाडु) के पल्लवों ने दक्षिण भारतीय कला को पत्थरों को काटकर (Rock-cut) भव्य मंदिर बनाने की दिशा दी।

- **नरसिंहवर्मन प्रथम 'महामल्ल':** इसने पुलकेशिन द्वितीय को युद्ध में मारकर 'वातापीकोंड' की उपाधि धारण की। प्रसिद्ध चीनी यात्री **ह्वेनसांग** इसी के समय कांची आया था।
- **महाबलीपुरम (मामल्लपुरम):** यहाँ के '**रथ मंदिर**' पल्लव कला की सर्वोच्च उपलब्धि हैं। इन्हें 'सप्त पैगोडा' भी कहा जाता है।

- विशेषता: ये 'एकात्मक' (Monolithic) मंदिर हैं। इनमें 'धर्मराज रथ' सबसे बड़ा और 'द्रौपदी रथ' सबसे छोटा है।
- सांस्कृतिक प्रभाव: पल्लव काल में ही 'नयनार' (शिव भक्त) और 'अलवार' (विष्णु भक्त) संतों के माध्यम से 'भक्ति आंदोलन' का सूत्रपात हुआ।

### 3. चोल राजवंश (Imperial Cholas): प्रशासन और नौसेना

विजयालय द्वारा स्थापित यह राजवंश अपनी अदम्य नौसैनिक शक्ति और अनूठी शासन प्रणाली के लिए प्रसिद्ध है।

- राजराज प्रथम: इसने 'तंजौर का वृहदेश्वर मंदिर' (राजराजेश्वर मंदिर) बनवाया। इसने उत्तरी श्रीलंका को जीतकर उसका नाम 'मुमडिचोलमण्डलम' रखा।
- राजेंद्र प्रथम: चोलों का महानतम विजेता। इसने संपूर्ण श्रीलंका को जीता और 'गंगैकोंडचोलपुरम' नगर बसाया। बंगाल के पाल शासक महिपाल को हराने के बाद इसने 'गंगैकोंड' की उपाधि धारण की।

#### चोल प्रशासन: स्थानीय स्वशासन (Local Self-Government)

चोलों की सबसे विशिष्ट पहचान उनकी स्वायत्त ग्रामीण शासन प्रणाली थी।

- उत्तरमेरुर अभिलेख (Uttiramerur Inscription): परांतक प्रथम के शासनकाल का यह अभिलेख ग्राम प्रशासन का विस्तृत 'संविधान' प्रस्तुत करता है।
- ग्राम सभाएँ: \* उर (Ur): सामान्य निवासियों की सभा।
  - सभा या महासभा: ब्राह्मणों (अग्रहारों) की सभा।
- चुनाव प्रणाली (कुडुवोल्ई): सदस्यों का चुनाव 'लॉटरी' पद्धति से होता था। योग्य उम्मीदवारों के नाम ताड़ के पत्तों पर लिखकर घड़े में डाले जाते थे और एक छोटे बच्चे से पर्ची निकलवाई जाती थी।
- योग्यता: सदस्य के पास अपनी भूमि (कम से कम 1.5 एकड़), अपना घर होना चाहिए और उसे वेदों का ज्ञान होना चाहिए।

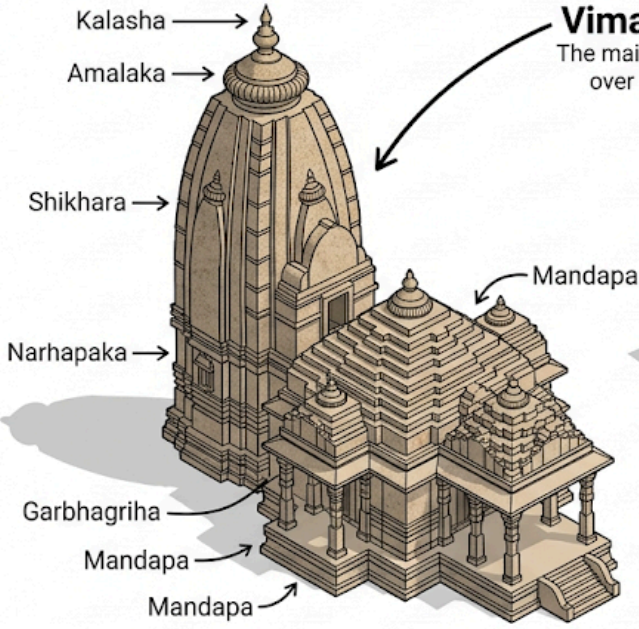
### 4. दक्षिण भारतीय मंदिर स्थापत्य: द्रविड़ शैली

पल्लवों द्वारा शुरू की गई यह शैली चोलों के समय अपने चरमोत्कर्ष पर पहुँची।

- मुख्य अंग:
  1. विमान (Vimana): गर्भगृह के ऊपर का पिरामिडनुमा बहुमंजिला शिखर। (द्रविड़ शैली की मुख्य पहचान)।
  2. गोपुरम् (Gopuram): मंदिर का विशाल और नक्काशीदार प्रवेश द्वार। (बाद के काल में यह विमान से भी ऊँचा होने लगा)।
  3. मण्डप: मंदिर का खंभों वाला सभा कक्ष।
  4. जलाशय: मंदिर परिसर के भीतर एक पवित्र कुण्ड या तालाब।

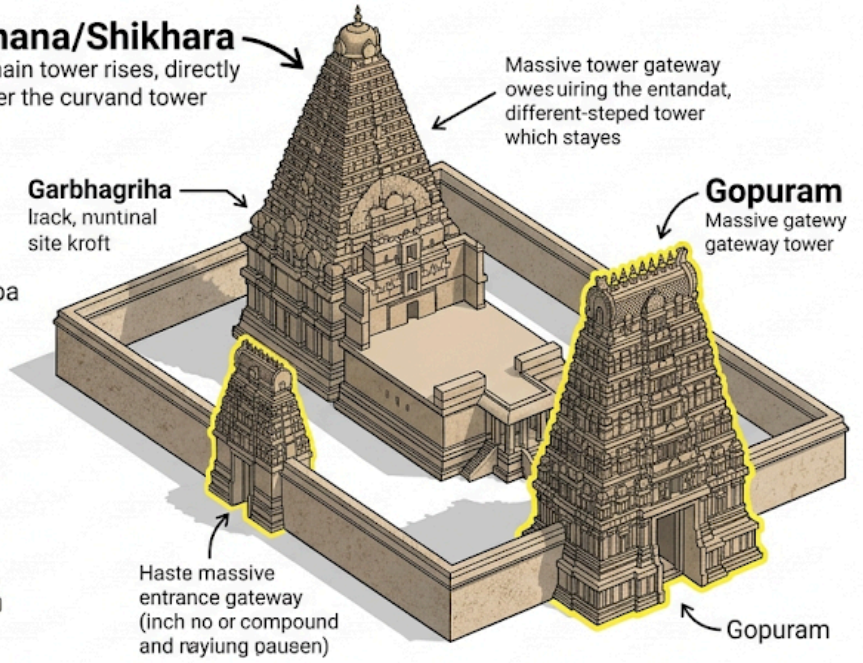
wincompete

## Nagara Style



**'Nagara Style' Temple**  
(North India)

## Dravida Style



**'Dravida Style' Temple**  
(South India)

### 5. विश्लेषण: चोलों का 'समुद्री साम्राज्यवाद' और आधुनिक पंचायत

चोलों की दो उपलब्धियाँ विश्व इतिहास में विरल हैं—पहली उनकी **'नौसेना'**, जिसने दक्षिण-पूर्वी एशिया (श्रीविजय साम्राज्य) तक भारत का प्रभाव फैलाया, जिससे बंगाल की खाड़ी 'चोलों की झील' बन गई। दूसरी, उनका **'स्थानीय स्वशासन'**। उत्तरमेरु अभिलेख में वर्णित चुनाव प्रक्रिया, कार्यसमितियाँ (वरियम) और सदस्यों हेतु कठोर नैतिकता के मापदण्ड आधुनिक 'पंचायती राज' से भी अधिक व्यवस्थित प्रतीत होते हैं। RPSC मुख्य परीक्षा में चोल प्रशासन के 'लोकतांत्रिक तत्वों' पर विश्लेषणात्मक प्रश्न पूछे जाते हैं।

### 6. महत्वपूर्ण तथ्य (Important Notes)

- **तथ्य: नटराज (शिव)** की कांस्य मूर्तियाँ चोल कला की विश्व को सबसे बड़ी देन हैं। ये मूर्तियाँ 'लुप्त मोम' (Cire Perdue) विधि से बनाई जाती थीं।
- **तथ्य:** चोल काल में सोने के सिक्कों को **'कासु'** कहा जाता था।
- **नोट:** पल्लव शासक महेंद्रवर्मन प्रथम ने 'मत्तविलास प्रहसन' नामक प्रसिद्ध हास्य नाटक की रचना की थी।
- **विरोधाभास:** जहाँ उत्तर भारतीय राज्यों में भूमि का स्वामित्व प्रायः राजा का माना जाता था, चोल अभिलेखों में 'निजी भूमि स्वामित्व' और 'सामुदायिक भूमि' के स्पष्ट प्रमाण मिलते हैं।

wincompete

## 7. त्वरित संदर्भ तालिका

पद / शब्द	विवरण	राजवंश
वरियम् (Variyam)	ग्राम सभा की कार्यकारी समितियाँ	चोल
गंगैकोंड	गंगा का विजेता (राजेंद्र I की उपाधि)	चोल
ऐहोल प्रशस्ति	हर्ष की पराजय का उल्लेख	चालुक्य
सप्त पैगोडा	महाबलीपुरम के रथ मंदिर	पल्लव
पेरुन्दुनम	उच्च श्रेणी के प्रशासनिक अधिकारी	चोल

## अध्याय 15: दक्षिण भारत के राजवंश: प्रशासनिक संरचना, समाज एवं कला का चरमोत्कर्ष

यह सामग्री 'उत्तरमेरुर अभिलेख', 'ऐहोल प्रशस्ति', 'तिरुमुरई' और डॉ. के.ए. नीलकंठ शास्त्री की मानक पुस्तक 'A History of South India' पर आधारित है।

### 1. पल्लव कालीन स्थापत्य कला का विकास (Styles Evolution)

पल्लवों ने दक्षिण भारत में मंदिर निर्माण की जिस शैली को जन्म दिया, वह चार चरणों में विकसित हुई। RPSC अक्सर इन शैलियों का क्रम और उनसे संबंधित शासकों के नाम पूछता है।

- महेन्द्र शैली (600-630 ईस्वी):** यह पूर्णतः 'पहाड़ों को काटकर' (Rock-cut) बनाए गए स्तंभ युक्त गुफा मंदिरों (मण्डप) की शैली थी।
- मामल्ल शैली (630-668 ईस्वी):** नरसिंहवर्मन प्रथम के समय विकसित। इसमें 'रथ मंदिरों' (एकात्मक मंदिर) का निर्माण हुआ। महाबलीपुरम के 7 रथ (सप्त पैगोडा) इसका उदाहरण हैं।
- राजसिंह शैली (674-800 ईस्वी):** यहाँ से 'संरचनात्मक मंदिरों' (Structural Temples) की शुरुआत हुई, जो पत्थर की ईंटों/खंडों से बनाए गए। उदाहरण: कांची का कैलाशनाथ मंदिर और महाबलीपुरम का तटीय मंदिर (Shore Temple)।
- अपराजित शैली:** यह पल्लव कला का अंतिम चरण था, जो चोल शैली के आगमन का मार्ग प्रशस्त करता है।

## 2. चोल प्रशासन: सूक्ष्म विभाजन और समितियाँ

चोलों का प्रशासन अपनी श्रेणीबद्ध व्यवस्था (Hierarchy) और ग्रामीण स्वायत्तता के लिए अद्वितीय था।

प्रशासनिक इकाइयाँ (उच्च से निम्न क्रम):

- **मण्डलम् (Mandalam):** साम्राज्य को प्रांतों में बाँटा गया था (अक्सर राजकुमार यहाँ के राज्यपाल होते थे)।
- **वलनाडू (Valanadu):** आधुनिक कमिश्नरी के समान।
- **नाडू (Nadu):** जिला स्तर की इकाई। इसकी सभा को 'नाट्टार' कहा जाता था।
- **कुर्रम् (Kurram):** गाँवों का समूह।

ग्राम प्रशासन की कार्यसमितियाँ (वरियम् - Variyam):

चोलों की ग्राम सभाएँ समितियों के माध्यम से कार्य करती थीं। उत्तरमेरुर अभिलेख के अनुसार प्रमुख समितियाँ थीं:

- **एरी वरियम्:** तालाब/सिंचाई समिति।
- **तोट्ट वरियम्:** उद्यान समिति।
- **पोन वरियम्:** स्वर्ण/वित्त समिति।
- **उदासीन वरियम्:** संन्यासियों या बाहरी लोगों की समिति।

## 3. सामाजिक एवं धार्मिक जीवन: भक्ति आंदोलन का उदय

दक्षिण भारत का यह काल केवल युद्धों का नहीं, बल्कि 'भक्ति' के सामाजिक विस्फोट का काल था।

- **समाज:** समाज मुख्य रूप से 'इडंगई' (वाम हस्त) और 'वलंगई' (दक्षिण हस्त) समूहों में विभाजित था। ब्राह्मणों को दी जाने वाली कर-मुक्त भूमि 'अग्रहार' या 'ब्रह्मदेय' कहलाती थी।
- **भक्ति आंदोलन:** पल्लव और चोल काल में वैष्णव और शैव संतों ने लोक भाषा (तमिल) में धर्म का प्रचार किया।
  - **अलवार (Alvars):** विष्णु के भक्त (संख्या 12)। इनमें एकमात्र महिला संत 'आण्डाल' थीं, जिन्हें 'दक्षिण की मीरा' कहा जाता है।
  - **नयनार (Nayanars):** शिव के भक्त (संख्या 63)।
- **धार्मिक ग्रंथ:** नयनार संतों के गीतों का संग्रह 'तिरुमुरई' कहलाता है, जिसे 'तमिल वेद' के समान पवित्र माना जाता है।

## 4. चोल कालीन कला: धातु शिल्प और चित्रकला

चोलों ने पत्थर के साथ-साथ धातु कला में भी विश्व स्तरीय मानक स्थापित किए।

- **नटराज की प्रतिमा:** भगवान शिव की चतुर्भुज नृत्य मुद्रा। यह 'ब्रह्मांडीय नृत्य' का प्रतीक है।
  - दाहिने ऊपरी हाथ में 'डमरू' (सृजन)।
  - बाएँ ऊपरी हाथ में 'अग्नि' (विनाश)।
  - नीचे का दाहिना हाथ 'अभय मुद्रा' (संरक्षण)।
  - पैर के नीचे 'अपस्मार' (अज्ञानता का राक्षस) दबा हुआ है।
- **तकनीक:** इसे 'मधुच्छिष्ट विधि' (Lost Wax Process) से बनाया जाता था।
- **मंदिर अर्थव्यवस्था:** चोल काल में मंदिर केवल पूजा स्थल नहीं थे, बल्कि वे बैंक, पाठशाला, अस्पताल और कला के सबसे बड़े 'नियोक्ता' (Employer) थे।

## 5. विश्लेषण: दक्षिण भारतीय राज्यों की 'समुद्री शक्ति' का सामरिक तर्क

चोल राजवंश (विशेषकर राजराज I और राजेन्द्र I) भारत के इतिहास में प्रथम ऐसे शासक थे जिन्होंने 'नीले पानी की नीति' (Blue Water Policy) का प्राचीन रूप अपनाया। उनकी शक्तिशाली नौसेना ने न केवल मालदीव और श्रीलंका को जीता, बल्कि दक्षिण-पूर्वी एशिया (इंडोनेशिया, मलेशिया) के **श्रीविजय साम्राज्य** पर आक्रमण कर अंतरराष्ट्रीय व्यापारिक मार्गों को सुरक्षित किया। यह 'सांस्कृतिक साम्राज्यवाद' का अनूठा उदाहरण है, जहाँ युद्ध के माध्यम से भारतीय धर्म और स्थापत्य (जैसे अंकोरवाट और बोरोबुदुर) सुदूर देशों तक पहुँचा।

## 6. महत्वपूर्ण तथ्य (Important Notes)

- तथ्य: 'पेरुन्दुनम' चोल प्रशासन में उच्च श्रेणी के अधिकारियों को और 'सिरुतनम' निम्न श्रेणी के अधिकारियों को कहा जाता था।
- तथ्य: चालुक्य शासक पुलकेशिन द्वितीय की 'ऐहोल प्रशस्ति' में उसे 'कालिदास' और 'भारवि' के समान विद्वान बताया गया है।
- नोट: कुडुवोलई (Kuduvolai) पद्धति में लॉटरी निकालने के लिए एक 'छोटे बच्चे' का उपयोग किया जाता था ताकि निष्पक्षता बनी रहे।
- विरोधाभास: कुछ इतिहासकार पल्लव और चोल शासन को 'सामंती' मानते हैं, जबकि चोलों की स्वायत्त ग्राम सभाएँ 'लोकतांत्रिक विकेंद्रीकरण' का प्रमाण देती हैं।

## 7. त्वरित संदर्भ तालिका

शब्द / पद	अर्थ / विवरण	प्रासंगिकता
नाट्टार (Nattar)	नाडू (जिला) की स्थानीय सभा	स्थानीय स्वशासन
वेल्लाल (Vellala)	धनी कृषक वर्ग	सामाजिक संरचना
देवदान (Devadana)	मंदिरों को दान दी गई भूमि	अर्थव्यवस्था
गोपुरम् (Gopuram)	मंदिर का विशाल प्रवेश द्वार	स्थापत्य (द्रविड़)
आण्डाल (Andal)	एकमात्र महिला अलवार संत	धार्मिक जीवन

wincompete

# बिंदु 4: प्राचीन भारत में कला, वास्तु और साहित्य

## अध्याय 16: प्राचीन भारतीय वास्तुकला: स्तूप, गुहा विहार एवं मंदिरों का उद्भव

यह सामग्री 'भारतीय वास्तुकला का इतिहास' (डॉ. रीता प्रताप), 'भारतीय कला' (डॉ. वासुदेव शरण अग्रवाल) और भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण (ASI) के आधिकारिक अभिलेखों पर आधारित है।

### 1. स्तूप स्थापत्य: बौद्ध धर्म का प्रतीक और संरचना

स्तूप का शाब्दिक अर्थ 'ढेर' होता है। मौर्य काल (विशेषकर अशोक) से पत्थर के स्तूपों के निर्माण में क्रांति आई।

स्तूप के मुख्य अंग (RPSC हेतु अनिवार्य शब्दावली):

- **अण्ड (Anda):** स्तूप का अर्द्धवृत्ताकार हिस्सा जो ब्रह्मांड का प्रतीक है।
- **हर्मिका (Harmika):** अण्ड के ऊपर स्थित एक वर्गाकार बाड़ (Fence), जिसे देवताओं का निवास स्थान माना जाता है। (यह स्तूप का सबसे पवित्र भाग है)।
- **यष्टि और छत्र (Yasti & Chhatra):** हर्मिका के बीच से निकलने वाला दंड और उस पर स्थित तीन छत्र, जो श्रद्धा, सम्मान और उदारता के प्रतीक हैं।
- **प्रदक्षिणा पथ:** अण्ड के चारों ओर बना रास्ता जहाँ श्रद्धालु परिक्रमा करते हैं।
- **वेदिका (Vedika):** स्तूप के चारों ओर बनी सुरक्षा दीवार।
- **तोरण (Torana):** नक्काशीदार भव्य प्रवेश द्वार। सांची के स्तूप के तोरण अपनी जातक कथाओं के अंकन हेतु विश्व प्रसिद्ध हैं।

प्रमुख स्तूप:

1. **सांची का स्तूप (मगध):** अशोक द्वारा निर्मित, शुंग काल में पत्थर से मढ़ा गया।
2. **भरहुत का स्तूप (मगध):** शुंग काल की कला का उत्कृष्ट उदाहरण।
3. **अमरावती का स्तूप (आंध्र):** सातवाहन काल में निर्मित, अपनी सफेद संगमरमर की रिलीफ कला हेतु प्रसिद्ध।

### 2. गुहा वास्तुकला (Rock-cut Cave Architecture)

भारतीय गुहा वास्तुकला का प्रारंभ मौर्य काल में हुआ और यह गुप्त काल तक अपने चरमोत्कर्ष पर पहुँची।

- **मौर्यकालीन गुफाएँ:** सम्राट अशोक और दशरथ ने गया (बिहार) के पास **बराबर और नागार्जुन की पहाड़ियों** में आजीवक संप्रदाय के भिक्षुओं हेतु गुफाएँ बनवाई (सुदामा गुफा, लोमश ऋषि गुफा)।
- **चैत्य और विहार:** \* **चैत्य:** बौद्धों का 'उपासना स्थल' या प्रार्थना कक्ष (जैसे- कार्ले का चैत्य, जो भारत का सबसे बड़ा और भव्य चैत्य है)।
  - **विहार:** भिक्षुओं के रहने का स्थान या 'निवास स्थल' (जैसे- कण्हेरी, नासिक की गुफाएँ)।
- **अजंता और एलोरा (महाराष्ट्र):** \* **अजंता:** कुल 29 गुफाएँ (केवल बौद्ध धर्म से संबंधित)। यहाँ की चित्रकारी 'फ्रेस्को' विधि से की गई है।
  - **एलोरा:** कुल 34 गुफाएँ (हिंदू, बौद्ध और जैन तीनों धर्मों से संबंधित)। यहाँ का **कैलाश मंदिर** (गुफा संख्या 16) राष्ट्रकूट शासक कृष्ण प्रथम ने एक ही चट्टान को ऊपर से नीचे काटकर बनवाया था।

### 3. हिंदू मंदिरों का उद्भव: गुप्त काल का योगदान

भारत में संरचनात्मक (Structural) मंदिरों का व्यवस्थित निर्माण गुप्त काल से प्रारंभ हुआ। प्रारंभिक मंदिर छत में चपटे होते थे, लेकिन धीरे-धीरे शिखरों का विकास हुआ।

गुप्तकालीन प्रमुख मंदिर (Exam Focus):

- **सांची का मंदिर संख्या 17:** सबसे प्रारंभिक मंदिर (केवल एक गर्भगृह और स्तंभ युक्त मण्डप)।
- **तिगवा का विष्णु मंदिर (जबलपुर):** प्रारंभिक स्थापत्य।

- नचना कुठारा का पार्वती मंदिर (पन्ना): मंदिर निर्माण की विकसित अवस्था।
- देवगढ़ का दशावतार मंदिर (ललितपुर): \* यह प्रथम शिखर युक्त मंदिर माना जाता है।
  - इसमें 'पंचायतन शैली' का प्रयोग हुआ है (मुख्य मंदिर के चारों कोनों पर चार छोटे मंदिर)।
  - इसके द्वार पर गंगा और यमुना की मूर्तियाँ उत्कीर्ण हैं।
- भीतरगाँव का मंदिर (कानपुर): यह पूर्णतः ईंटों से निर्मित प्राचीनतम मंदिर है।

#### 4. स्थापत्य की प्रमुख शैलियाँ (Brief Intro)

प्राचीन भारत में भौगोलिक आधार पर तीन शैलियाँ उभरीं:

1. **नागर शैली:** उत्तर भारत (हिमालय से विन्ध्य)। शिखर रेखीय होते हैं।
2. **द्रविड़ शैली:** दक्षिण भारत (कृष्णा से कन्याकुमारी)। पिरामिडनुमा 'विमान' इसकी विशेषता है।
3. **वेसर शैली:** मध्य भारत (विन्ध्य से कृष्णा)। नागर और द्रविड़ का सम्मिश्रण (जैसे- चालुक्य मंदिर)।

#### 5. विश्लेषण: स्थापत्य का वैचारिक आधार

प्राचीन भारतीय वास्तुकला केवल पत्थरों का खेल नहीं थी, बल्कि यह 'दर्शन' की भौतिक अभिव्यक्ति थी। स्तूप का 'अण्ड' महापरिनिर्वाण का प्रतीक था, तो गुप्तकालीन मंदिरों का 'गर्भगृह' उस गहन अंधकारमय स्थान का प्रतीक था जहाँ भक्त का परमात्मा (मूर्ति) से एकांत मिलन होता था। मौर्यों की 'पाँलिश' (ओप) और गुप्तों की 'बारीक नक्काशी' यह सिद्ध करती है कि प्राचीन कलाकार न केवल शिल्पी थे, बल्कि वे पदार्थ विज्ञान (Material Science) के भी ज्ञाता थे। RPSC परीक्षाओं में अक्सर 'हर्मिका', 'चैत्य' और 'पंचायतन शैली' के तकनीकी अर्थ पूछे जाते हैं।

#### 6. महत्वपूर्ण तथ्य (Important Notes)

- **तथ्य:** लोमश ऋषि गुफा (बराबर पहाड़) का प्रवेश द्वार नक्काशीदार है, जो लकड़ी के स्थापत्य की नकल प्रतीत होता है।
- **नोट:** धोलावीरा (सिंधु सभ्यता) में जल स्थापत्य के साक्ष्य मिले हैं, जो भारत में वास्तुकला का सबसे प्राचीनतम इंजीनियरिंग रूप है।
- **विरोधाभास:** कुछ विद्वान गांधार कला को विदेशी मानते हैं, परंतु इसकी आत्मा और विषय-वस्तु पूर्णतः भारतीय (बौद्ध) है, केवल बाहरी आवरण यूनानी है।

#### 7. त्वरित संदर्भ तालिका

शब्द / स्थल	श्रेणी	विशेष तथ्य
हर्मिका	स्तूप का अंग	देवताओं का निवास (पवित्र भाग)।
कार्ले	चैत्य	भारत का सबसे विशाल प्रार्थना कक्ष।
देवगढ़	मंदिर	प्रथम शिखर युक्त एवं पंचायतन मंदिर।

एलोरा	गुहा मंदिर	त्रिवेणी संगम (हिंदू, बौद्ध, जैन)।
भीतरगाँव	मंदिर	ईंटों से निर्मित गुप्तकालीन मंदिर।

### 3. गुप्तकालीन राजनैतिक एवं यथार्थवादी साहित्य

गुप्त काल में केवल प्रेम कथाएँ ही नहीं, बल्कि राजनीति और समाज के यथार्थ पर भी उत्कृष्ट ग्रंथ लिखे गए।

- **विशाखदत्त:**
  - **मुद्राराक्षस:** यह एक 'नायकविहीन' और 'स्त्री पात्र विहीन' राजनैतिक नाटक है। इसमें चाणक्य द्वारा नंद वंश के मंत्री 'राक्षस' को अपनी ओर मिलाने और चंद्रगुप्त मौर्य के उत्कर्ष की कथा है।
  - **देवीचंद्रगुप्तम:** इसमें गुप्त शासक रामगुप्त और चंद्रगुप्त द्वितीय की ऐतिहासिक घटना का वर्णन है।
- **शूद्रक:**
  - **मृच्छकटिकम (मिट्टी की खिलौना गाड़ी):** यह प्राचीन साहित्य का सबसे यथार्थवादी नाटक है। इसमें एक निर्धन ब्राह्मण 'चारुदत्त' और उज्जैन की गणिका 'वसंतसेना' की प्रेम कथा के साथ तत्कालीन समाज के भ्रष्टाचार और न्याय व्यवस्था का चित्रण है।

### 4. नीति एवं कथा साहित्य: पंचतंत्र

- **विष्णु शर्मा:** इन्होंने 'पंचतंत्र' की रचना की।
  - **महत्व:** यह संसार का सबसे प्रसिद्ध नीति-कथा ग्रंथ है। इसमें पशु-पक्षियों के माध्यम से राजनीति और व्यवहार की शिक्षा दी गई है।
  - **अनुवाद:** इसका पहलवी भाषा में अनुवाद 'कलीलाह व दिमनाह' नाम से हुआ। यह बाइबिल के बाद विश्व की सर्वाधिक भाषाओं में अनूदित पुस्तक है।

### 5. व्याकरण, शब्दकोश एवं विज्ञान ग्रंथ

- **अमरसिंह:** इन्होंने 'अमरकोष' (नामलिंगानुशासन) की रचना की, जिसे संस्कृत का सबसे प्रसिद्ध शब्दकोश माना जाता है।
- **भर्तृहरि:** इन्होंने 'नीतिशतक', 'श्रृंगारशतक' और 'वैराग्यशतक' (शतकत्रय) की रचना की।
- **कामन्दक:** इन्होंने 'नीतिसार' लिखा, जिसे गुप्तकाल का 'अर्थशास्त्र' कहा जाता है।

### 6. विश्लेषण: संस्कृत साहित्य का समाजशास्त्रीय प्रभाव

प्राचीन संस्कृत साहित्य केवल मनोरंजन का साधन नहीं था, बल्कि यह तत्कालीन 'राजधर्म' और 'लोक-जीवन' का दर्पण था। जहाँ कालिदास का साहित्य आदर्शवाद और राजसी वैभव को दर्शाता है, वहीं शूद्रक का 'मृच्छकटिकम' समाज के निम्न वर्गों (चोर, जुआरी, दासी) को मंच पर स्थान देकर 'सामाजिक यथार्थवाद' की शुरुआत करता है। विशाखदत्त की रचनाएँ भारतीय इतिहास लेखन में 'राजनैतिक कूटनीति' के महत्व को प्रतिपादित करती हैं। RPSC परीक्षाओं में अक्सर इन लेखकों के **समकालीन शासकों** और **ग्रंथों की विषय-वस्तु** पर तुलनात्मक प्रश्न पूछे जाते हैं।

### 7. महत्वपूर्ण तथ्य (Important Notes)

- **तथ्य:** मेघदूतम को 'दूतकाव्य' परंपरा का प्रथम ग्रंथ माना जाता है।
- **नोट:** अभिज्ञान शाकुंतलम का अंग्रेजी में सर्वप्रथम अनुवाद सर विलियम जोन्स ने 1789 में किया था।

- **विरोधाभास:** कालिदास के समय को लेकर विद्वानों में मतभेद है (प्रथम शताब्दी ई.पू. बनाम चौथी शताब्दी ईस्वी), लेकिन कलात्मक प्रौढ़ता के आधार पर उन्हें गुप्तकालीन माना जाना 'परीक्षा की दृष्टि' से सबसे रक्षात्मक पक्ष है।

## 8. त्वरित संदर्भ तालिका

विधा	नाम	मुख्य विषय / कथा
महाकाव्य	रघुवंशम	इक्ष्वाकु वंश के राजाओं (दिलीप से अग्निमित्र तक) का वर्णन।
महाकाव्य	कुमारसंभवम	शिव-पार्वती विवाह और कार्तिकेय (कुमार) के जन्म की कथा।
खण्डकाव्य	मेघदूतम	विरही यक्ष द्वारा मेघ (बादल) के माध्यम से अपनी प्रिया को संदेश भेजना।
खण्डकाव्य	ऋतुसंहारम	छह ऋतुओं का प्राकृतिक और शृंगारिक वर्णन।
नाटक	अभिज्ञान शाकुंतलम	राजा दुष्यंत और शकुंतला की प्रेम कथा। (विश्व का सर्वश्रेष्ठ नाटक)।
नाटक	मालविकाग्निमित्रम	शुंग राजा अग्निमित्र और मालविका की प्रेम कथा।

wincompete

लेखक	कृति	मुख्य आकर्षण
भास	स्वप्नवासवदत्तम	संस्कृत का प्रथम पूर्ण उपलब्ध नाटक।
कालिदास	अभिज्ञान शाकुंतलम	शकुंतला की अंगूठी और दुष्यंत का विस्मरण।
विशाखदत्त	मुद्राराक्षस	चाणक्य की कूटनीति का विवरण।
शूद्रक	मृच्छकटिकम	वसंतसेना और चारुदत्त की कथा।
विष्णु शर्मा	पंचतंत्र	नीतिपरक पशु-कथाएँ।
भट्टि	रावणवध (भट्टिकाव्य)	व्याकरण के नियमों का काव्य रूप।

## अध्याय 18: प्राकृत एवं तमिल (संगम) साहित्य: जनभाषा और दक्षिण का शास्त्रीय वैभव

यह सामग्री 'संगम साहित्य का इतिहास' (के.ए. नीलकंठ शास्त्री), 'प्राकृत साहित्य का इतिहास' (डॉ. जगदीश चंद्र जैन) और RPSC के भाषा एवं साहित्य खंड के मानकों पर आधारित है।

### 1. प्राकृत साहित्य: लोक-संवेदना और जैन दर्शन

प्राकृत भाषा को 'जनसाधारण की भाषा' माना जाता था। संस्कृत जहाँ विशिष्ट वर्ग की भाषा थी, वहीं प्राकृत ने आम जनता और जैन धर्म के विचारों को संरक्षित किया।

- **जैन आगम (Jain Agamas):** भगवान महावीर ने अपने उपदेश '**अर्धमागधी**' (प्राकृत का एक रूप) में दिए। जैन धर्म के 12 अंग, 12 उपांग और मूल सूत्र प्राकृत साहित्य की आधारशिला हैं।
- **हाल की 'गाथा सप्तशती' (Gatha Saptashati):** \* **लेखक:** सातवाहन राजा **हाल** (प्रथम शताब्दी ईस्वी)।
  - **विशेषता:** यह 'महाराष्ट्री प्राकृत' में रचित 700 मुक्तकों (छंदों) का संग्रह है। इसमें ग्रामीण जीवन, प्रेम और श्रृंगार का अत्यंत सजीव चित्रण है।
  - **ऐतिहासिक महत्व:** यह ग्रंथ सिद्ध करता है कि प्राचीन काल में राजा न केवल योद्धा थे, बल्कि उच्च कोटि के साहित्यकार भी थे।
- **अन्य प्रमुख ग्रंथ:**

- गुणाढ्य की 'वृहत्कथा': यह 'पैशाची प्राकृत' में लिखी गई थी। हालांकि मूल ग्रंथ लुप्त हो गया है, लेकिन इसी के आधार पर बाद में 'कथासरित्सागर' जैसे ग्रंथों की रचना हुई।
- प्राकृत व्याकरण: हेमचंद्र का 'सिद्धहेमशब्दानुशासन' प्राकृत व्याकरण का सबसे महत्वपूर्ण ग्रंथ है।

## 2. तमिल (संगम) साहित्य: दक्षिण भारत की साहित्यिक चेतना

'संगम' का अर्थ है 'विद्वानों की गोष्ठी या परिषद'। पांड्य राजाओं के संरक्षण में मदुरै में तीन संगम आयोजित हुए, जिनमें तमिल साहित्य की रचना हुई।

संगम	स्थान	अध्यक्ष	उपलब्ध ग्रंथ
प्रथम	मदुरै (समुद्र में विलीन)	अगस्त्य ऋषि	कोई नहीं
द्वितीय	कपाटपुरम् (अलवै)	अगस्त्य, तोलकाप्पियर	तोलकाप्पियम
तृतीय	उत्तरी मदुरै	नकीरर	एतुत्तोकै, पत्तुपात्तु

## 3. प्रमुख तमिल ग्रंथ एवं महाकाव्य (Exam Focus)

### A. तोलकाप्पियम (Tolkappiyam):

- लेखक: अगस्त्य ऋषि के शिष्य तोलकाप्पियर।
- विषय: यह तमिल भाषा का सबसे प्राचीन उपलब्ध ग्रंथ है। यह मूलतः एक 'व्याकरण ग्रंथ' है, लेकिन इसमें तत्कालीन समाज के आठ प्रकार के विवाहों और सामाजिक रीति-रिवाजों का भी वर्णन है।

### B. शिल्पपादकारम (Silappadikaram) - 'नूपुर की कहानी':

- लेखक: चेर शासक सेनगुट्टुवन के भाई इलगों अडिगल।
- कथा: इसमें नायक कोवलन, उसकी पत्नी कण्णगी और गणिका माधवी की त्रासदीपूर्ण कहानी है।
- महत्व: इसे 'तमिल काव्य का इलियड' कहा जाता है। इसमें कण्णगी के सतीत्व और 'पत्तिनी पूजा' (कण्णगी पूजा) के आरंभ का उल्लेख है।

### C. मणिमेखलै (Manimekalai):

- लेखक: मदुरै के एक अनाज व्यापारी सीतलै सतनार।
- कथा: यह 'शिल्पपादकारम' की अगली कड़ी है। इसमें कोवलन और माधवी की पुत्री 'मणिमेखलै' के साहसिक जीवन और उसके बौद्ध भिक्षुणी बनने की कथा है।
- महत्व: यह ग्रंथ बौद्ध धर्म के प्रचार और दार्शनिक सिद्धांतों से ओतप्रोत है।

### D. तिरुक्कुरल (Tirukkural):

- लेखक: तिरुवल्लुवर।
- महत्व: इसे 'तमिल साहित्य का बाइबिल' या 'पंचम वेद' कहा जाता है। इसमें नीतिशास्त्र, राजनीति और धर्म का अद्भुत समन्वय है।

#### 4. विश्लेषण: संगम साहित्य में सामाजिक-आर्थिक प्रतिबिंब

संगम साहित्य केवल कल्पना का काव्य नहीं है, बल्कि यह दक्षिण भारत के 'प्रथम ऐतिहासिक युग' का आधिकारिक दर्पण है। जहाँ संस्कृत साहित्य में 'आदर्शवाद' अधिक है, वहीं संगम कविताओं (अकम् और पुरम्) में प्रेम और युद्ध का 'यथार्थपरक' वर्णन है। इन ग्रंथों से हमें रोमन साम्राज्य के साथ होने वाले काली मिर्च के व्यापार और दक्षिण के तीन राजवंशों (चोल, चेर, पाण्ड्य) के संघर्ष की जानकारी मिलती है। RPSC की दृष्टि से **तोलकाप्पियम** का व्याकरणिक महत्व और **शिल्पपादकारम** की ऐतिहासिकता सर्वाधिक रक्षात्मक प्रश्न क्षेत्र हैं।

#### 5. महत्वपूर्ण तथ्य (Important Notes)

- **तथ्य:** 'अकम्' कविताएँ प्रेम से संबंधित थीं, जबकि 'पुरम्' कविताएँ युद्ध और वीरता से संबंधित थीं।
- **नोट:** जैन विद्वान तिरुत्तक्कदेवर द्वारा रचित '**जीवक चिंतामणि**' को तमिल साहित्य के पाँच महाकाव्यों में श्रेष्ठ माना जाता है।
- **विरोधाभास:** संगम साहित्य के कालक्रम को लेकर मतभेद है, लेकिन अधिकांश विद्वान इसे **300 ई.पू. से 300 ईस्वी** के मध्य का मानते हैं। कुछ शोधकर्ता इसे और अधिक प्राचीन सिद्ध करने का प्रयास करते हैं।

#### 6. त्वरित संदर्भ तालिका

ग्रंथ	लेखक	मुख्य तथ्य
गाथा सप्तशती	राजा हाल	प्राकृत श्रृंगार काव्य।
तोलकाप्पियम	तोलकाप्पियर	प्राचीनतम तमिल व्याकरण।
शिल्पपादकारम	इलगों अडिगल	कण्णगी की गाथा, 'तमिल इलियड'।
मणिमेखलै	सीतलै सतनार	बौद्ध धर्म प्रधान महाकाव्य।
तिरुक्कुरल	तिरुवल्लुवर	तमिल बाइबिल / लघु वेद।

## अध्याय 19: प्राचीन भारत में विज्ञान एवं तकनीकी साहित्य: खगोल, गणित एवं आयुर्वेद

यह सामग्री 'प्राचीन भारत में विज्ञान' (डॉ. सत्यप्रकाश), 'बृहत्संहिता' (वराहमिहिर) और 'आर्यभटीय' के आधिकारिक भाष्यों पर आधारित है।

### 1. गणित एवं खगोल विज्ञान (Mathematics and Astronomy)

प्राचीन भारत में गणित को 'वेदांग' का हिस्सा माना जाता था। "यथा शिखा मयूराणाम्..." के अनुसार वेदों के सभी अंगों में गणित का स्थान सर्वोच्च (शिरोमणि) बताया गया है।

#### A. आर्यभट्ट (476 ईस्वी):

- ग्रंथ: 'आर्यभटीय' (Aryabhatiya) और 'सूर्य सिद्धांत'।
- योगदान: \* इन्होंने शून्य (Zero) के सिद्धांत और दशमलव (Decimal) पद्धति के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।
  - $\pi$  (पाई) का मान 3.1416 बताया जो आधुनिक मान के अत्यंत निकट है।
  - खगोल विज्ञान में इन्होंने प्रतिपादित किया कि पृथ्वी गोल है और अपनी धुरी पर घूमती है, जिसके कारण दिन और रात होते हैं।
  - इन्होंने सूर्य ग्रहण और चंद्र ग्रहण के वैज्ञानिक कारणों (छाया का पड़ना) की व्याख्या की।

#### B. वराहमिहिर (गुप्तकालीन):

- ग्रंथ: 'पंचसिद्धांतिका' (Panchasiddhantika), 'बृहत्संहिता' और 'बृहज्जातक'।
- योगदान: \* इन्होंने तत्कालीन पाँच खगोल सिद्धांतों (पौलिश, रोमक, वशिष्ठ, सौर और पितामह) का संकलन किया।
  - 'बृहत्संहिता' को प्राचीन भारत का 'विश्वकोश' (Encyclopedia) कहा जाता है, जिसमें खगोल, वर्षा, कृषि और रत्न विज्ञान का अद्भुत विवरण है।

#### C. ब्रह्मगुप्त (598 ईस्वी):

- ग्रंथ: 'ब्रह्मस्फुट सिद्धांत' और 'खण्डखाद्यक'।
- विशिष्टता: इनका जन्म राजस्थान के भीनमाल (जालौर) में हुआ था।
- गुरुत्वाकर्षण: न्यूटन से सदियों पहले इन्होंने बताया कि "प्रकृति के नियम के अनुसार पृथ्वी सभी वस्तुओं को अपनी ओर खींचती है।"

### 2. चिकित्सा विज्ञान: आयुर्वेद (Ayurveda)

प्राचीन भारत में 'अथर्ववेद' को आयुर्वेद का मूल स्रोत माना जाता है।

#### A. चरक (प्रथम शताब्दी ईस्वी):

- पहचान: इन्हें 'भारतीय चिकित्सा शास्त्र का जनक' माना जाता है। ये कुषाण शासक कनिष्क के राजवैद्य थे।
- ग्रंथ: 'चरक संहिता'।
- सिद्धांत: इन्होंने पाचन, चयापचय और प्रतिरक्षा (Immunity) पर बल दिया। इनके अनुसार शरीर में तीन दोष होते हैं— वात, पित्त और कफ। इनका असंतुलन ही रोग का कारण है।

#### B. सुश्रुत (छठी शताब्दी ई.पू.):

- पहचान: इन्हें 'शल्य चिकित्सा (Surgery) का जनक' और 'प्लास्टिक सर्जरी का पितामह' कहा जाता है।
- ग्रंथ: 'सुश्रुत संहिता'।
- योगदान: \* इन्होंने मोतियाबिंद, पथरी और नाक की प्लास्टिक सर्जरी (Rhinoplasty) का विवरण दिया।
  - इन्होंने 121 प्रकार के शल्य उपकरणों (Surgical Instruments) का उल्लेख किया।

### 3. रसायन एवं धातु विज्ञान (Chemistry and Metallurgy)

- **नागार्जुन:** इन्हें 'भारत का आइंस्टीन' और 'रसायन शास्त्र का ज्ञाता' माना जाता है। उनकी रचना 'रस रत्नाकर' धातु शोधन पर आधारित है।
- **लौह स्तंभ (महरौली):** चंद्रगुप्त द्वितीय द्वारा निर्मित यह स्तंभ प्राचीन भारतीय धातु विज्ञान का उत्कृष्ट प्रमाण है, जिस पर 1600 वर्षों बाद भी जंग नहीं लगा है।

#### 4. विश्लेषण: प्राचीन विज्ञान बनाम आधुनिक दृष्टि

प्राचीन भारतीय विज्ञान केवल आध्यात्मिक नहीं, बल्कि प्रयोगवादी (Empirical) था। आर्यभट्ट द्वारा पृथ्वी की परिधि की गणना और ब्रह्मगुप्त द्वारा शून्य के गणितीय संचालन के नियम यह सिद्ध करते हैं कि भारतीय मेधा 'अमूर्त चिंतन' में विश्व में अग्रणी थी। सुश्रुत के उपकरणों की बनावट आज के आधुनिक 'सर्जिकल ब्लेड्स' से आश्चर्यजनक समानता रखती है। RPSC परीक्षाओं में अक्सर इन वैज्ञानिकों के **विशिष्ट सिद्धांतों** और उनकी **जन्मस्थली/कार्यस्थली** (जैसे ब्रह्मगुप्त और राजस्थान) के अंतर्संबंधों पर प्रश्न पूछे जाते हैं।

#### 5. महत्वपूर्ण तथ्य (Important Notes)

- **तथ्य: भास्कराचार्य (द्वितीय)** ने 'सिद्धांत शिरोमणि' की रचना की, जिसमें लीलावती (अंकगणित) और बीजगणित शामिल हैं।
- **नोट:** कनिष्क के समय के **चरक** और गुप्त काल के **धन्वंतरि** के समय अंतराल को लेकर अक्सर छात्र भ्रमित होते हैं; धन्वंतरि चंद्रगुप्त द्वितीय के नवरत्नों में से एक थे।
- **विरोधाभास:** शून्य के आविष्कार का श्रेय अक्सर अज्ञात भारतीय को दिया जाता है, लेकिन इसके गणितीय प्रयोग को आर्यभट्ट और ब्रह्मगुप्त ने व्यवस्थित किया।

#### 6. त्वरित संदर्भ तालिका (Quick Scan)

वैज्ञानिक / विद्वान	प्रमुख ग्रंथ	मुख्य उपलब्धि
आर्यभट्ट	आर्यभटीय	शून्य, दशमलव, पृथ्वी का घूर्णन।
वराहमिहिर	बृहत्संहिता	खगोल विज्ञान का विश्वकोश।
ब्रह्मगुप्त	ब्रह्मस्फुट सिद्धांत	गुरुत्वाकर्षण का प्रारंभिक सिद्धांत।
चरक	चरक संहिता	त्रिदोष सिद्धांत (चिकित्सा)।
सुश्रुत	सुश्रुत संहिता	शल्य चिकित्सा एवं प्लास्टिक सर्जरी।

## अध्याय 20: कला एवं साहित्य का निष्कर्ष: समन्वय, विदेशी प्रभाव एवं शब्दावली

यह सामग्री 'The Wonder That Was India' (ए.एल. बाशम), 'भारतीय कला' (डॉ. वासुदेव शरण अग्रवाल) और RPSC के कला-संस्कृति प्रभाग के आधिकारिक स्रोतों पर आधारित है।

### 1. कला शैलियों का समन्वय एवं विकास

भारतीय स्थापत्य कला कभी भी जड़ नहीं रही, बल्कि इसमें क्षेत्रीय विविधताओं का अद्भुत समन्वय (Synthesis) देखा गया।

- **वेसर शैली (मिश्रित शैली):** यह समन्वय का सबसे बड़ा उदाहरण है। विंध्य से कृष्णा नदी के बीच विकसित इस शैली में उत्तर के 'शिखर' और दक्षिण के 'विमान' व 'मण्डप' का मेल मिलता है। होयसल राजाओं के मंदिरों (हेलेबिड और बेलूर) में यह समन्वय अपनी चरम पराकाष्ठा पर था, जहाँ 'तारांकित' (Stellar) आधार वाले मंदिर बनाए गए।
- **मथुरा कला का प्रभाव:** मथुरा कला ने न केवल बुद्ध, बल्कि जैन तीर्थकरों और हिंदू देवताओं की मूर्तियों के निर्माण के लिए एक 'प्रोटोटाइप' तैयार किया, जिसे गुप्त काल के कलाकारों ने और अधिक सूक्ष्म व आध्यात्मिक बनाया।

### 2. विदेशी प्रभाव: हेलेनिस्टिक एवं रोमन तत्व

प्राचीन भारतीय कला पूरी तरह पृथक नहीं थी; विशेषकर उत्तर-पश्चिम में विदेशी प्रभावों ने इसे समृद्ध किया।

- **गांधार कला (ग्रीको-बुद्धिस्ट):** सिकंदर के आक्रमण के बाद उत्तर-पश्चिम में यूनानी (Hellenistic) कला का भारतीय बौद्ध विषयों के साथ मिलन हुआ।
  - **प्रभाव:** बुद्ध की मूर्तियों में घुंघराले बाल, पारदर्शी वस्त्रों की सिलवटें और शरीर की मांसलता यूनानी देवता 'अपोलो' से प्रेरित थी।
- **सिक्का निर्माण:** भारत में नियमित और कलात्मक सिक्कों (Indo-Greek coins) की शुरुआत का श्रेय यूनानियों को जाता है। उन्होंने सिक्कों पर राजा का नाम और चित्र अंकित करने की परंपरा शुरू की।
- **खगोल विज्ञान:** भारतीय ज्योतिष पर 'रोमक' और 'पौलिश' सिद्धांतों का प्रभाव यूनानी संपर्क का ही परिणाम था। 'होरा शास्त्र' शब्द भी यूनानी 'होरा' (Hora) से व्युत्पन्न है।

### 3. 'वृहत्तर भारत' (Greater India): सांस्कृतिक विस्तार

प्राचीन भारत की कला और साहित्य केवल भौगोलिक सीमाओं तक सीमित नहीं रहे। दक्षिण-पूर्वी एशिया में भारतीय संस्कृति का गहरा प्रभाव पड़ा।

- **अंकोरवाट मंदिर (कंबोडिया):** यह विश्व का सबसे बड़ा हिंदू मंदिर परिसर है, जो सूर्यवर्मन द्वितीय द्वारा निर्मित है। इसकी बनावट भारतीय द्रविड़ और स्थानीय खमेर शैली का अद्भुत संगम है।
- **बोरोबुदुर (जावा, इंडोनेशिया):** यह विश्व का सबसे विशाल बौद्ध स्तूप है, जो भारतीय शैलेंद्र राजवंश के काल में बना।
- **साहित्यिक प्रभाव:** रामायण और महाभारत की कथाएँ आज भी इंडोनेशिया (वायांग कुल्लित - छाया नाटक) और थाईलैंड (रामकियेन) की संस्कृति का अभिन्न अंग हैं।

#### 4. परीक्षा उपयोगी महत्वपूर्ण शब्दावली (Glossary)

शब्द	अर्थ / विवरण
जगती (Jagati)	मंदिर का वह ऊँचा चबूतरा जिस पर मुख्य मंदिर खड़ा होता है।
अंतराल (Antarala)	गर्भगृह और मण्डप के बीच का गलियारा।
आमलक (Amalaka)	नागर शैली के मंदिर के शिखर के ऊपर स्थित एक गोलाकार पत्थर।
गोपुरम् (Gopuram)	द्रविड़ शैली के मंदिरों का विशाल और भव्य प्रवेश द्वार।
स्तूपी (Stupi)	द्रविड़ मंदिर के शिखर के सबसे ऊपरी गुंबदनुमा भाग को कहते हैं।
तोरण (Torana)	स्तूप या मंदिर का नक्काशीदार द्वार।
प्रतीत्यसमुत्पाद	बौद्ध दर्शन का कारण-कार्य सिद्धांत।
सप्तभंगी नय	जैन धर्म के स्याद्धाद का दूसरा नाम।
एकात्मक (Monolithic)	एक ही विशाल चट्टान को काटकर बनाई गई संरचना।
भित्ति चित्र (Fresco)	गीली दीवार पर की गई चित्रकारी (जैसे अजंता में)।

## 5. विश्लेषण: प्राचीन भारतीय संस्कृति की 'निरंतरता' का राज

प्राचीन भारतीय कला और साहित्य की सबसे बड़ी विशेषता उसकी 'आत्मसात करने की शक्ति' (Assimilation) है। इसने यूनानी मूर्तिकला को अपनाया लेकिन उसे बुद्ध की शांति प्रदान की; इसने स्थानीय प्राकृत को अपनाया लेकिन उसे 'आगमों' के माध्यम से शास्त्रीय गरिमा दी। गुप्तकालीन मंदिर निर्माण से लेकर चोलों की कांस्य प्रतिमाओं तक, भारत ने एक ऐसी 'सांस्कृतिक पहचान' विकसित की जो केवल धार्मिक नहीं, बल्कि वैज्ञानिक और सौंदर्यपरक भी थी। RPSC की दृष्टि से गांधार कला के विदेशी तत्वों और चोलों की कांस्य निर्माण तकनीक पर विश्लेषणात्मक प्रश्न सर्वाधिक संभावित हैं।

## 6. महत्वपूर्ण तथ्य(Important Notes)

- **तथ्य:** दक्षिण भारतीय मंदिरों में 'अभिषेकम्' के लिए प्रयुक्त होने वाले जल की निकासी हेतु 'प्रणाल' (Gargoyle) की व्यवस्था स्थापत्य का एक तकनीकी पक्ष था।
- **नोट:** अजंता की गुफाओं में चित्रकारी हेतु 'खनिज रंगों' का प्रयोग किया गया है, जो आज भी अपनी चमक बनाए हुए हैं।
- **विरोधाभास:** कुछ पश्चिमी विचारक भारतीय कला को यूनान का 'ऋणी' मानते हैं, लेकिन भारतीय विद्वान (जैसे ई.बी. हैवेल) तर्क देते हैं कि भारतीय कला का 'आध्यात्मिक आधार' पूर्णतः मौलिक है।

## 7. त्वरित संदर्भ तालिका (Quick Scan)

क्षेत्र	मुख्य उपलब्धि	विदेशी / बाहरी प्रभाव
वास्तुकला	नागर, द्रविड़, वेसर शैलियाँ	अंकोरवाट (सांस्कृतिक विस्तार)
मूर्तिकला	बुद्ध, नटराज की प्रतिमाएँ	गांधार कला (हेलेनिस्टिक प्रभाव)
साहित्य	संस्कृत, तमिल, प्राकृत	रामायण/महाभारत का वैश्विक प्रसार
विज्ञान	शून्य, दशमलव, शल्य चिकित्सा	रोमक सिद्धांत (ज्योतिष)

### Referances-

1. *The Discovery of India* - Jawaharlal Nehru (Art section).
2. *भारतीय कला और संस्कृति* - नितिन सिंघानिया (प्राचीन खंड)।
3. *A Concise History of Science in India* - D.M. Bose.
4. *प्राचीन भारत का वैज्ञानिक इतिहास* - राजस्थान हिंदी ग्रंथ अकादमी।

5. *RPSC RAS Pre/Mains -PYQ Analysis.*
6. *Sanskrit Literature - A.B. Keith.*
7. *भारतीय साहित्य का इतिहास - डॉ. नगेंद्र।*
8. *A History of South India - K.A. Nilakanta Sastri.*
9. *राजपूत काल और दक्षिण भारत का इतिहास - डॉ. वी.सी. पाण्डेय (राजस्थान हिंदी ग्रंथ अकादमी)।*
10. *The Cholas - K.A. Nilakanta Sastri.*
11. *भारतीय वास्तुकला का इतिहास - डॉ. रीता प्रताप।*
12. *प्राचीन भारत का इतिहास एवं संस्कृति - के.सी. श्रीवास्तव।*
13. *A History of South India - K.A. Nilakanta Sastri (Oxford University Press).*
14. *प्राचीन भारत का इतिहास - डॉ. वी.सी. पाण्डेय (राजस्थान हिंदी ग्रंथ अकादमी)।*
15. *The Classical Age - R.C. Majumdar.*
16. *गुप्त-वाकाटक युग - डॉ. ए.एस. अल्तेकर।*
17. *कौटिल्य का अर्थशास्त्र - डॉ. वाचस्पति गैरोला।*
18. *Asoka and the Decline of the Mauryas - Romila Thapar.*
19. *Ancient India - R.S. Sharma.*
20. *भारतीय दर्शन का इतिहास - डॉ. एस.एन. दासगुप्ता।*
21. *History of Ancient India - Upinder Singh.*
22. *बौद्ध धर्म का इतिहास - डॉ. भरत सिंह उपाध्याय।*
23. *भारतीय दर्शन - डॉ. एस. राधाकृष्णन।*
24. *प्राचीन भारत का इतिहास - झा एवं श्रीमाली।*
25. *भारतीय दर्शन की रूपरेखा - एम. हिरियन्ना।*
26. *वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - डॉ. कपिलदेव द्विवेदी।*
27. *प्राचीन भारत का परिचय - राम शरण शर्मा (NCERT/Standard).*
28. *वैदिक सभ्यता और संस्कृति - राजस्थान हिंदी ग्रंथ अकादमी।*
29. *Indus Age: The Writing System - Gregory L. Possehl.*

wincompete